पन्दरहवीं सदी की अ़ज़ीम इल्मी व रूहानी शख़्सिय्यत
शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी की ह़याते मुबा-रका के रोशन अवराक़

तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत

क़िस्त़-3

सुन्नते निकाह

- शादी सुन्नत है
- नमाज़ों की बा जमाअ़त अदाएगी
- बिन्ते अ़त्तार का जहेज़
- निकाह की निय्यतें
- शादी का पहला दा'वत नामा
- मक्तूबाते अ़त्तारिय्या
- ब-र-कत वाला निकाह
- शहज़ादए अ़त्तार की शादी
- म-दनी सेहरे

मक-त-बतुल मदीना
दा'वते इस्लामी
सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा अह़मदआबाद-1. गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ! (المُستطرَف ج۱ ص۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 सि.हि.

(सुन्नते निकाह़)

येह रिसाला (**सुन्नते निकाह़**)

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में पेश किया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,

तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. 9374031409

E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

पहले इसे पढ़ लीजिये

मीठ मीठे इस्लामी भाइयो ! ''**अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश**'' के लिये दीगर ज़राएअ़ के साथ साथ बुज़ुर्गाने दीन عَلَيۡهِم رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡمُبِيۡن के ह़ालात व वाक़िआ़त जानना भी बेह़द **मुफ़ीद** है क्यूं कि येह नुफ़ूसे क़ुदसिय्या अह़कामे शरीअ़त पर मज़्बूती से **कारबन्द** थे। चुनान्चे इन्ही के नक़्शे क़दम पर चल कर हम **अल्लाहु** रब्बुल इ़ज़्ज़त की रह़मत से क़ब्रो ह़श्र में सुर्ख़-रू हो कर अ़ज़ाबाते दोज़ख़ से **ख़लासी** और इन्आ़माते जन्नत तक **रसाई** पा सकते हैं। ज़बानी और क़-लमी दोनों त़रह़ से तज़्किरए सालिह़ीन हमारे अकाबिरीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الۡمُبِيۡن का शेवा रहा है शायद इसी लिये **सीरत निगारी** का येह सिल्सिला कई सदियों से जारी है। اَلۡحَمۡدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** से सीरत के मौज़ूअ़ पर भी कई **कुतुबो रसाइल** शाएअ़ हो चुके हैं, **म-सलन** सीरते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَسَلَّم, सह़ाबए किराम (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهُم) का इ़श्क़े रसूल, इमामे हुसैन (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنۡهُ) की करामात, जिन्नात का बादशाह, सांप नुमा जिन्न, **तज़्किरए** इमाम अह़मद रज़ा (رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيۡه), फ़क़ीहे आ'ज़मे हिन्द, शर्ह़े श-ज-रए क़ादिरिय्या वग़ैरहा। इसी सिल्सिले की एक कड़ी ''**तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत**'' भी है जिस में पन्दरहवीं सदी की अ़ज़ीम इ़ल्मी व रूह़ानी शख़्सिय्यत शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते

इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के **इब्तिदाई ह़ालाते ज़िन्दगी**, रोज़-मर्रा के **मा'मूलात, इबादात, मुजा-हदात, अख़्लाक़िय्यात व दीनी ख़िदमात** के वाक़िआ़त के साथ साथ आप की ज़ाते मुबा-रका से ज़ाहिर होने वाली **ब-रकात व करामात** और आप की **तस्नीफ़ात, मक्तूबात, बयानात व मल्फ़ूज़ात के फ़ुयूज़ात** भी जम्अ़ किये गए हैं। फ़िलह़ाल **''तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत''** को मुख़्तसर रसाइल की सूरत में शाएअ़ किया जा रहा है ताकि मु-तवस्सित़ त़ब्क़े से तअ़ल्लुक़ रखने वाले इस्लामी भाई भी ब आसानी इन्हें ख़रीद कर पढ़ सकें। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ बा'द में इन रसाइल का मज्मूआ़ भी शाएअ़ किया जाएगा। इस वक़्त **''तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत''** का तीसरा ह़िस्सा बनाम **''सुन्नते निकाह़''** आप के सामने है। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ चौथा ह़िस्सा **''शौक़े इल्मे दीन''** के नाम से अ़न्क़रीब पेश किया जाएगा। इस का पहला और दूसरा ह़िस्सा भी मक-त-बतुल मदीना से हदिय्यतन त़लब कीजिये।

म-दनी इल्तिजा : ''तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत'' में हम ने महज़ सुनी सुनाई बातों को नक़्ल करने से गुरेज़ किया है बल्कि ह़त्तल मक़्दूर मा'लूमात फ़राहम करने वालों से मुलाक़ात या राबित़ा कर के तस्दीक़ कर ली गई है। ताहम हम महज़ बशर हैं ख़त़ा से **पाक** नहीं हैं, फिर कम्पोज़िंग की ग़-लत़ी भी मुम्किन है, इस लिये दर-ख़्वास्त है कि अगर आप को इन

रसाइल में किसी क़िस्म की ग़-लती नज़र आए तो अपने नाम व पते के साथ तह़रीरी तौ़र पर हमारी **इस्लाह़** फ़रमा दीजिये। और अगर किसी को इस तज़्किरे में शामिल ह़ालात व वाक़िआ़त के बारे में **मज़ीद मा'लूमात** हों या कोई **मश्वरा** देना चाहें तो वोह भी सरे वरक़ पर लिखे हुए फ़ोन नम्बर पर या ब ज़रीअ़ए डाक या ई मेइल राबित़ा फ़रमा लें। हमें मैदाने तालीफ़ व तस्नीफ़ की शह सुवारी का **दा'वा** हरगिज़ नहीं बल्कि जज़्बा ही हमारा रहनुमा है, बहर ह़ाल हमारी भरपूर कोशिश होती है कि जितना बन पड़े इन्शा परदाज़ी (या'नी फ़न्ने तह़रीर) और सवानेह़ निगारी के **उसूलों** का ख़याल रखें, लिहाज़ा इस **''तज़्किरे''** को उर्दू अदब का शाहकार समझने के बजाए **एह़सासे ज़िम्मादारी** के अवराक़ में लिपटा हुवा तोह़फ़ा समझ लीजिये। जो **अन्दाज़** आप को पसन्द आए वोह **तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत** के ह़ुस्न की **रा'नाई** और क़ाबिले ए'तिराज़ ह़िस्सा हमारी **कोताह फ़हमी** का नतीजा होगा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ है कि हमें **''अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश''** के लिये **म-दनी इन्आ़मात** के मुत़ाबिक़ अ़मल और म-दनी क़ाफ़िलों का मुसाफ़िर बनते रहने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

शो'बए अमीरे अहले सुन्नत (دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ)

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

13 शव्वालुल मुकर्रम 1429 सि.हि., 13 अक्तूबर 2008 सि.ई.

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सय्यिदुल मुर-सलीन, ख़ा-तमुन्नबिय्यीन, जनाबे रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बिशारत निशान है : "जो मुझ पर शबे जुमुआ़ और जुमुआ़ के रोज़ सो बार दुरूद शरीफ़ पढ़े, अल्लाह तआ़ला उस की सो ह़ाजतें पूरी फ़रमाएगा।"

(جامع الاحاديث للسيوطی، رقم۷۳۷۷، ج۳، ص۷۵)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

शादी सुन्नत है

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا से मरवी है कि **अल्लाह** के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़ह़ुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**निकाह़** मेरी सुन्नत से है पस जो शख़्स मेरी सुन्नत पर अ़मल न करे वोह मुझ से नहीं। लिहाज़ा **निकाह़** करो, क्यूं कि मैं तुम्हारी कसरत की बिना पर दीगर उम्मतों पर फ़ख़्र करूंगा। जो क़ुदरत रखता हो वोह **निकाह़** करे और जो क़ुदरत न पाए तो रोज़े रखा करे क्यूं कि रोज़ा शह़्वत को तोड़ता है।"

(سنن ابن ماجه، كتاب النكاح، باب ماجاء فی فضل النكاح، رقم ١٨٤٦، ج٢، ص٤٠٦)

निकाह़ करना कब सुन्नत है ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर महर, नान व नफ़्क़ा देने और अज़्दवाजी हुक़ूक़ पूरे करने पर क़ादिर हो और शह्वत का बहुत ज़ियादा ग़-लबा न हो तो **निकाह़** करना **सुन्नते मुअक्कदा** है। ऐसी ह़ालत में **निकाह़** न करने पर अड़े रहना **गुनाह है**। अगर ह़राम से बचना...या इत्तिबाए़ सुन्नत...या औलाद का हुसूल पेशे नज़र हो तो **सवाब** भी पाएगा और अगर मह्ज़ हुसूले लज़्ज़त या क़ज़ाए शह्वत मक़्सूद हो तो **सवाब** नहीं मिलेगा, **निकाह़** बहर ह़ाल हो जाएगा।

(माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, किताबुन्निकाह़, ह़िस्सा : 7, स. 559)

निकाह़ करना फ़र्ज़ भी है और ह़राम भी !

निकाह़ कभी फ़र्ज़, कभी वाजिब, कभी मक्रूह और बा'ज़ अवक़ात तो ह़राम भी होता है। चुनान्चे अगर येह यक़ीन हो कि **निकाह़** न करने की सूरत में ज़िना में मुब्तला हो जाएगा तो **निकाह़** करना **फ़र्ज़** है। ऐसी सूरत में **निकाह़** न करने पर गुनाहगार होगा। अगर महर व नफ़्क़ा देने पर क़ुदरत हो और ग़-ल-बए शह्वत के सबब ज़िना या बद निगाही या मुश्त ज़नी में मुब्तला होने का अन्देशा हो तो इस सूरत में निकाह़ **वाजिब** है अगर नहीं करेगा तो गुनाहगार होगा। अगर येह अन्देशा हो कि **निकाह़** करने की सूरत में नान व नफ़्क़ा या दीगर ज़रूरी

बातों को पूरा न कर सकेगा तो अब **निकाह़** करना **मक्रूह** है। अगर येह यक़ीन हो कि **निकाह़** करने की सूरत में नान व नफ़्क़ा या दीगर ज़रूरी बातों को पूरा न कर सकेगा तो अब **निकाह़** करना **ह़राम** और **जहन्नम में ले जाने वाला काम** है (ऐसी सूरत में शह्वत तोड़ने के लिये रोज़े रखने की तरकीब बनाए)।

(माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, किताबुन्निकाह़, ह़िस्सा : 7, स. 559)

निकाह़ की निय्यतें

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह्रो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ० या'नी मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है। (المعجم الكبير للطبرانی، الحديث: ۵۹۴۲، ج۶، ص۱۸۵) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार** क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : **निकाह़** करने वाले को चाहिये कि अच्छी अच्छी निय्यतें कर ले ताकि दीगर फ़वाइद के साथ साथ वोह सवाब का भी मुस्तह़िक़ हो सके।

''**निकाह़ सुन्नत है**'' के नव हुरूफ़ की निस्बत से 9 निय्यतें पेशे ख़िदमत हैं :

{1} सुन्नते रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अदाएगी करूंगा {2} नेक औरत से **निकाह़** करूंगा {3} अच्छी क़ौम में निकाह़ करूंगा {4} इस के ज़रीए़ ईमान की हिफ़ाज़त करूंगा {5} इस के ज़रीए़ शर्मगाह की हिफ़ाज़त करूंगा {6} ख़ुद को बद निगाही से बचाऊंगा {7} महज़ लज़्ज़त या क़ज़ाए शह्वत के लिये नहीं हुसूले औलाद के लिये तख़्लिया करूंगा {8} मिलाप से पहले ''बिस्मिल्लाह'' और मस्नून दुआ़ पढ़ूंगा {9} सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत में इज़ाफ़े का ज़रीआ़ बनूंगा।

म-दनी मश्वरा : शादी शुदगान निय्यतों वग़ैरा की मज़ीद मा'लूमात के लिये फ़तावा र-ज़विय्या (तख़्रीज शुदा) जिल्द 23 सफ़ह़ा नम्बर 385, 386 पर मस्अला नम्बर 41, 42 का मुत़ा-लआ़ फ़रमा लें।

(माख़ूज़ अज़ तरबिय्यते औलाद, स. 33)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का निकाह़े मुबारक

शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी

دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की शादी ग़ालिबन 1398 सि.हि., 1978 सि.ई. में तक़रीबन 29 बरस की उ़म्र में बाबुल मदीना कराची में हुई।

कोई रिश्ता देने पर तय्यार न था !

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने एक म-दनी मुज़ा-करे[1] में सुवालात के जवाबात देते हुए जो कुछ इर्शाद फ़रमाया उस का ख़ुलासा अपने अल्फ़ाज़ में पेशे ख़िदमत है चुनान्चे आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं कि जब मेरी शादी की सूरत बनी तो कोई रिश्ता देने के लिये तय्यार न होता था क्यूं कि उस वक़्त दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल की बहारें नहीं थीं और हमारे मुआ़-शरे में **दाढ़ी** सजाने वाले नौ जवान निहायत ही कमयाब थे। उस ज़माने में भी اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मेरे चेहरे पर सुन्नत के मुत़ाबिक़ एक मुश्त दाढ़ी थी। आख़िरे कार एक जगह रिश्ता तै़ हुवा, लेकिन चन्द दिनों बा'द उन्हों ने भी मंगनी तोड़ दी।

बारगाहे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में इस्तिग़ासा

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : मंगनी

1. म-दनी मुज़ा-करा दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में उस इज्तिमाअ़ को कहते हैं जिस में अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अ़क़ाइदो आ'माल, शरीअ़तो त़रीक़त, तारीख़ो सीरत, त़िबाबतो रूह़ानिय्यत वग़ैरा **मुख़्तलिफ़ मौज़ूआ़त** पर पूछे गए सुवालात के जवाबात देते हैं। म-दनी मुज़ा-करात की केसिटें, सीडीज़ और वीसीडीज़ मक-त-बतुल मदीना की किसी भी शाख़ से हदिय्यतन त़लब कीजिये।

टूट जाने पर मैं बहुत दिल बरदाश्ता हुवा और एक रात अपने महल्ले की बादामी मस्जिद (मीठा दर बाबुल मदीना कराची) में बैठे बैठे **बारगाहे रिसालत** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में मन्ज़ूम इस्तिग़ासा पेश किया जिस में मज़्मून कुछ यूं था कि **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं आप की सुन्नत पर चलना चाहता हूं लेकिन लोग इस त़रह़ के त़र्ज़े अ़मल से मेरा दिल दुखाते हैं । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ कुछ ही अ़र्से में एक और जगह रिश्ते की तरकीब बन गई और शादी भी हो गई ।

उन के निसार कोई कैसे ही रन्ज में हो
जब याद आ गए हैं सब ग़म भुला दिये हैं

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان हमारे मुआ़-शरे में पाई जाने वाली इस तक्लीफ़ देह सूरते ह़ाल की अ़क्कासी करते हुए अपनी किताब "**इस्लामी ज़िन्दगी**" के सफ़ह़ा **36** ता **39** पर लिखते हैं : "मैं ने बहुत मुसल्मानों को कहते सुना कि हम **दाढ़ी** वाले को अपनी लड़की न देंगे, लड़का शौक़ीन चाहिये और बहुत जगह अपनी आंखों से देखा कि लड़की वालों ने दूल्हा से मुत़ा-लबा किया कि **दाढ़ी** मुंडवा दो तो लड़की दी जा सकती है, चुनान्चे लड़कों ने

दाढ़ियां मुंडवाईं, कहां तक दुख की बातें सुनाऊं ? येह भी कहते सुना गया कि नमाज़ी को लड़की न देंगे, वोह मस्जिद का मुल्ला है, हमारी लड़की के अरमान और शौक़ पूरे न करेगा । लड़की वालों को चाहिये कि दूल्हा में तीन बातें देखें, **अव्वल** तन्दुरुस्त हो, क्यूं कि ज़िन्दगी की बहार तन्दुरुस्ती से है । **दूसरे** उस के चाल चलन अच्छे हों, बद मआ़श न हो, शरीफ़ लोग हों, **तीसरे** येह कि लड़का हुनर मन्द और कमाउ हो कि कमा कर अपने बीवी और बच्चों को पाल सके । मालदारी का कोई ए'तिबार नहीं येह चलती फिरती चांदनी है । ह़दीसे पाक में है कि निकाह़ में कोई माल देखता है कोई जमाल । मगर عَلَيْكَ بِذَاتِ الدِّيْنِ (तुम दीनदारी देखो ।)

(صحيح مسلم، كتاب الرضاع، باب استحباب النكاح.....الخ، الحديث ٧١٥، ص ٧٧٢)

येह भी याद रखो कि मौलवियोंऔर दीनदारों की बीवियां फ़ेशन वालों की बीवियों से ज़ियादा आराम में रहती हैं । अव्वल तो इस लिये कि दीनदार आदमी ख़ुदा तआ़ला के ख़ौफ़ से बीवी बच्चों का ह़क़ पहचानता है । दूसरे येह कि दीनदार आदमी की निगाह सिर्फ़ बीवी ही पर होती है और आज़ाद लोगों की टेम्परेरी (temporary या'नी आ़रिज़ी) बीवियां बहुत सी होती हैं । जिन का दिन रात तजरिबा हो रहा है । वोह फूल को सूंघता और हर बाग़ में

जाता है । कुछ दिनों तो अपनी बीवी से महब्बत करता है फिर आंख फेर लेता है । (इस्लामी ज़िन्दगी, स. 36 ता 39, मुलख़्ख़सन)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त इ़ज़्ज़त देने वाला है

(अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه तहदीसे ने'मत के तौर पर फ़रमाते हैं कि) एक वक़्त था कि ख़ुद मुझे कोई रिश्ता देने को तय्यार न था और आज रब्बे अकरम عَزَّوَجَلَّ का ऐसा करम है कि **लोग मुझ से पूछ पूछ कर शादियां करते हैं** कि तुम कहो तो हम फ़ुलां जगह शादी कर दें । अल्लाह तआ़ला ही इ़ज़्ज़त अ़त़ा फ़रमाने वाला है ।

وَتُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ ط (پ ٣، آل عمران : ٢٦)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जिसे चाहे इ़ज़्ज़त दे और जिसे चाहे ज़िल्लत दे ।

(म-दनी मुज़ा-करा नम्बर : 4)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

शादियों में होने वाली बेहूदा रस्में

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! फ़ी ज़माना हमारे मुआ़-शरे में मंगनी और शादी के मौक़अ़ पर बा'ज़ ना जाइज़ और बेहूदा रुसूमात इस क़दर रवाज पा गई हैं कि इन के बिग़ैर तक़रीबात को अधूरा समझा जाता है । **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه शादी बियाह की तक़रीबात

में होने वाले गुनाहों की निशान देही करते हुए अपने रिसाले "**गाने बाजे की होल नाकियां**" में लिखते हैं :

अफ़्सोस ! सद करोड़ अफ़्सोस ! आजकल शादी जैसी मीठी मीठी सुन्नत बहुत सारे गुनाहों में घिर चुकी है, बेहूदा रुसूमात इस का **जुज़्वे ला युन्फ़क** बन चुकी हैं, مَعَاذَاللّٰہِ عَزَّوَجَلَّ ह़ालात इस क़दर अब्तर हो चुके हैं कि जब तक बहुत सारे ह़राम काम न कर लिये जाएं उस वक़्त तक अब शादी की सुन्नत अदा हो ही नहीं सकती। म-सलन मंगनी ही की रस्म ले लीजिये इस में लड़का अपने हाथ से लड़की को अंगूठी पहनाता है ह़ालां कि येह ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। शादी में मर्द अपने हाथ मेहंदी से रंगता है येह भी ह़राम है, मर्दों और औ़रतों की मख़्लूत़ दा'वतें की जाती हैं, या कहीं बराए नाम बीच में पर्दा डाल दिया जाता है मगर फिर भी औ़रतों में ग़ैर मर्द घुस कर खाना बांटते, ख़ूब विडियो फ़िल्में बनाते हैं[1] शौक़िया तस्वीरें बनाने और बनवाने वालों को अ़ज़ाबे ख़ुदा वन्दी से डर जाना चाहिये कि! मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت नक़्ल करते हैं, रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं, **हर तस्वीर बनाने वाला जहन्नम में है और हर तस्वीर के बदले जो उस ने बनाई थी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ एक मख़्लूक़ पैदा करेगा जो उसे अ़ज़ाब करेगी।**"

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 21, स. 427, रज़ा फ़ाउन्डेशन मर्कज़ुल औलिया लाहोर)

1. कसीर उ़-लमाए किराम मज़्हबी बयानात वग़ैरा की विडियो को जाइज़ क़रार देते हैं।

आह ! शादियों में ख़ूब फ़ेशन परस्ती का मुज़ा-हरा किया जाता है, ख़ानदान की जवान लड़कियां ख़ूब नाचतीं, गातीं ऊधम मचाती हैं। इस दौरान मर्द भी बिला तकल्लुफ़ अन्दर आते जाते हैं, मर्द और औ़रतें जी भर कर बद निगाही करते हैं, ख़ूब आंखों का ज़िना होता है, न ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ न शर्मे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم। सुनो सुनो ! रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है, "आंखों का ज़िना देखना और कानों का ज़िना सुनना और ज़बान का ज़िना बोलना और हाथों का ज़िना पकड़ना है।" (مسلم شریف، ص١٤٢٨، حدیث٢٦٥٧) याद रखिये ! ग़ैर मर्द ग़ैर औ़रत को देखे या ग़ैर औ़रत ग़ैर मर्द को शह्वत से देखे येह ह़राम और दोनों के लिये येह जहन्नम में ले जाने वाले काम हैं।

ना फ़रमानी की नुहूसत

फ़िल्मी रेकॉर्डिंग के बिग़ैर आजकल शायद ही कहीं शादी होती हो। अगर कोई समझाए तो बा'ज़ अवक़ात जवाब मिलता है, वाह साहिब ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने पहली बच्ची की ख़ुशी दिखाई है और गाना बाजा न करें, बस जी **ख़ुशी** के वक़्त सब कुछ चलता है। (مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ) अरे नादानो ! **ख़ुशी के वक़्त अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अ दा किया जाता है** कि ख़ुशियां त़वील हों, ना फ़रमानी नहीं की जाती, कहीं ऐसा न हो कि इस ना फ़रमानी की नुहूसत से इक्लौती बेटी दुल्हन बनने के

आठवें दिन रूठ कर **मयके** आ बैठे और मज़ीद आठ दिन के बा'द तीन **तलाक़** का परचा आ पहुंचे और सारी खुशियां धूल में मिल जाएं। या धूमधाम से नाच गानों की धमा चौकड़ी में बियाही हुई दुल्हन **9** माह के बा'द पहली ही ज़चगी में मौत के घाट उतर जाए। आह! सद हज़ार आह!

महब्बत खुसूमात में खो गई   येह उम्मत रुसूमात में खो गई

शादी की खुशी में गाने बजाने का गुनाह करने वालो! कान खोल कर सुनो! हदीसे पाक में है, "दो आवाज़ों पर दुन्या व आख़िरत में ला'नत है, (1) ने'मत के वक़्त बाजा (2) मुसीबत के वक़्त चिल्लाना।"

(كنز العمال، حديث ٤٠٦٥٤، ج١٥، ص٩٥ دار الكتب العلميه بيروت)

(गाने बाजे की होल नाकियां, स. 7 ता 13)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ना जाइज़ रस्मों से पाक शादी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! आप ने मुला-हज़ा फ़रमाया कि **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه शादी बियाह की खुशी में होने वाली बेहूदा तक़रीबात को न सिर्फ़ खुद ना पसन्द करते हैं बल्कि दीगर मुसल्मानों को भी इन **गुनाहों भरे मा'मूलात** से इज्तिनाब की शफ़्क़त आमेज़ ताकीद फ़रमा रहे हैं, तो भला कैसे मुम्किन था कि **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की अपनी शादी में गुनाहों भरी **तक़रीबात**

मुन्अ़क़िद की जातीं या ना जाइज़ रस्मों पर अ़मल किया जाता ! हरगिज़ नहीं बल्कि हमारा हुस्ने ज़न है कि اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की शादी फ़ुज़ूल व ना जाइज़ रस्मों से **पाक** और इन्तिहाई **सा-दगी का मज़्हर** रही होगी ।

ब-र-कत वाला निकाह़

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि **नूर के पैकर,** तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुलत़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''बड़ी ब-र-कत वाला निकाह़ वोह है जिस में बोझ कम हो ।''

(مسند احمد ، الحدیث ٢٤٥٨٣، ج٩، ص٣٦٥)

ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मौलाना मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان मिरआतुल मनाजीह़ में इस ह़दीस के तह़्त लिखते हैं : ''या'नी जिस **निकाह़** में फ़रीक़ैन का **ख़र्च** कम कराया जाए, **महर** भी मा'मूली हो, जहेज़ भारी न हो, कोई जानिब **मक़रूज़** न हो जाए, किसी त़रफ़ से शर्त़ सख़्त न हो, अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) के तवक्कुल पर लड़की दी जाए वोह **निकाह़** बड़ा ही **बा ब-र-कत** है ऐसी शादी **ख़ाना आबादी** है, आज हम ह़राम रस्मों, बेहूदा रवाजों की वजह से शादी को **ख़ाना बरबादी** बल्कि ख़ानहा (या'नी बहुत सारे घरों के लिये बाइ़से) बरबादी बना लेते हैं । अल्लाह तआ़ला इस ह़दीसे पाक

पर अ़मल की तौफ़ीक़ दे। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 5, स. 11)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की **शादी मुबारक** की मुख़्तसर रूदाद पढ़िये और **ह़दीसे** पाक की **ब-र-कतों** का खुली आंखों से नज़ारा कीजिये :

मस्जिद में निकाह़ हुवा

इस जदीद दौर में भी जगमग जगमग करते शादी हॉल के बजाए **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का निकाह़ मुस्तह़ब त़रीक़े पर **मेमन मस्जिद** (बोल्टन मार्केट, बाबुल मदीना कराची) में हुवा। मुफ़्तिये आ'ज़म पाकिस्तान ह़ज़रते मौलाना **मुफ़्ती वक़ारुद्दीन क़ादिरी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى ने जुमुआ़ के दिन तक़रीबन **11:00 बजे आप** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का **निकाह़** पढ़ाया, जिस में लोगों की भारी ता'दाद ने शिर्कत की।

म-दनी फूल : (1) निकाह़ ख़्वां का आ़लिमे बा अ़मल होना मुस्तह़ब है। (मुलख़्ख़सन अज़ फ़तावा र-ज़विय्या, जिल्द पन्जुम, स. 33, 61) **(2)** निकाह़ का ए'लानिया त़ौर पर मस्जिद में और जुमुआ़ के दिन होना मुस्तह़ब है। (अगर लड़की के घर या किसी और जगह हो तब भी कोई ह़रज नहीं।)

(الدرالمختار، كتاب النكاح، ج٤، ص٧٥)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

क़ब्रिस्तान व मज़ारे मुबारक की ह़ाज़िरी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शादी की ख़ुशी में सरशार दूल्हा इस दिन को यादगार बनाने के लिये क्या कुछ नहीं करता ? उस के अ़ज़ीज़ो व अक़ारिब की त़रफ़ से उ़मूमन गुनाहों से भरपूर वेराइटी **प्रोग्राम** मुन्अ़क़िद किये जाते हैं, त़रह़ त़रह़ की जाइज़ व ना जाइज़ रस्में निभाई जाती हैं । यूं दूल्हा की आंखों पर **ग़फ़्लत** की ऐसी पट्टी बंध जाती है कि उसे क़ब्र की **तन्हाइयां** याद रहती हैं न मैदाने मह़शर की **परेशानियां** ! मगर दूसरी जानिब **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को देखिये कि अपनी **शादी** के दिन **क़ब्रिस्तान** भी जा रहे हैं और निराले अन्दाज़ से **फ़िक्रे आख़िरत** भी कर रहे हैं :

(**चुनान्चे अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **फ़रमाते हैं**) اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ नमाज़े जुमुआ़ नूर मस्जिद (काग़ज़ी बाज़ार बाबुल मदीना कराची) में **मुफ़्ती वक़ारुद्दीन क़ादिरी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْهَادِى की इक़्तिदा में अदा की, क़ब्रिस्तान भी गया और खारादर में वाक़ेअ़ ह़ज़रते सय्यिद **मुह़म्मद शाह दूल्हा** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के मज़ार शरीफ़ पर ह़ाज़िरी की सआ़दत भी ह़सालि हुई और अस्पताल जा कर अपने एक बहुत ही प्यारे दोस्त ग़ुलाम यासीन क़ादिरी र-ज़वी (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه) जो कि ख़ून के सरत़ान (Blood Cancer) के मरीज़ थे उन की **इ़यादत** भी की ।

उन्हों ने मुझे मब्लग़ 25 रुपै शादी का तोह़फ़ा इनायत फ़रमाया।[1]

ख़ुशी के मौक़अ़ पर ग़म के मुआ़-मलात में ह़िस्सा लेना चाहिये ताकि ख़ुशियों के सबब इन्सान इतना न "**फूल**" जाए कि "**फट**" जाए। वैसे भी मेरा मुआ़-मला ऐसा था कि **मेरे अन्दर ग़म की कैफ़िय्यात बहुत थीं** क्यूं कि मैं मरीज़ों और परेशान ह़ालों से मिलता रहता था, बेचारों की लाचारी से बड़ी इ़ब्रत मिलती है। **इस त़रह़ से मैं ने अपनी शादी के दिन के अवक़ात मज़्कूरा अन्दाज़ पर गुज़ारने की सआ़दत ह़ासिल की।**

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

म-दनी फूल : ज़ियारते क़ुबूर **मुस्तह़ब** है हर हफ़्ते में एक दिन ज़ियारत करे, जुमुआ़ या जुमा'रात या हफ़्ता या पीर के दिन मुनासिब है, सब में **अफ़्ज़ल** रोज़े जुमुआ़ वक़्ते सुब्ह़ है। औलियाए किराम के **मज़ाराते त़य्यिबा पर सफ़र कर के जाना जाइज़ है,** वोह अपने ज़ाइर को नफ़्अ़ पहुंचाते हैं और अगर वहां कोई मुन्करे शर-ई हो

1. कुछ दिन के बा'द ग़ुलाम यासीन क़ादिरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى का इन्तिक़ाल हो गया। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने अपनी अम्मीजान (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهَا) के मज़ार से मुल्ह़िक़ बनाया हुवा चबूतरा मर्ह़ूम की क़ब्र के लिये पेश कर दिया। आज भी अम्मीजान (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهَا) के पहलू में मर्ह़ूम की क़ब्र मौजूद है।

म–सलन औ़रतों से इख़्तिलात़ तो उस की वजह से ज़ियारत तर्क न की जाए कि ऐसी बातों से नेक काम तर्क नहीं किया जाता, बल्कि उसे बुरा जाने और मुम्किन हो तो बुरी बात ज़ाइल करे ।

(बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 4, स. 197)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नमाज़ों की बा जमाअ़त अदाएगी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शादी की तक़रीबात में मस्रूफ़ हो कर अक्सर लोग अपनी नमाज़ें **क़ज़ा** कर बैठते हैं, मगर اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने शादी होने के बा'द भी ह़स्बे आ़दत नमाज़े जुमुआ़, अ़स्र, मग़रिब और इशा **बा जमाअ़त** अदा की ।

(अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **फ़रमाते हैं) रब** عَزَّوَجَلَّ के करम से शुरूअ़ से ही बा जमाअ़त नमाज़ पढ़ने का ज़ेह्न था, **जमाअ़त तर्क कर देना मेरी लुग़त में ही नहीं था ।** यहां तक कि जब मेरी वालिदए मोह़्–त–रमा का इन्तिक़ाल हुवा तो उस वक़्त घर में दूसरा कोई मर्द न था, मैं अकेला था मगर اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ मां की मय्यित छोड़ कर मस्जिद में नमाज़ पढ़ाने की सआ़दत पाई । मां के ग़म में दौराने नमाज़ मेरे आंसू ज़रूर बह रहे थे, मगर इस सूरते ह़ाल में भी اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ जमाअ़त न छोड़ी । इसी त़रह़ शादी वाले दिन भी **तमाम नमाज़ें**

बा जमाअ़त अदा करने की सआ़दत ह़ासिल हुई ।
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

पैग़ामे अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه (रिसाला फ़ातिह़ा का त़रीक़ा स. **24**, मत़्बूआ़ मक-त-बतुल मदीना) में तह़रीर फ़रमाते हैं : **ख़बरदार** जब भी आप के यहां (शादी), नियाज़ या किसी क़िस्म की तक़रीब हो, नमाज़ का वक़्त होते ही कोई मानेए शर-ई न हो तो इन्फ़िरादी व इज्तिमाई कोशिश के ज़रीए तमाम मेहमानों समेत **नमाज़े बा जमाअ़त के लिये मस्जिद का रुख़ करें ।** बल्कि ऐसे अवक़ात में दा'वत ही न रखें कि बीच में नमाज़ आए और गहमा गहमी या सुस्ती के बाइ़स مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जमाअ़त फ़ौत हो जाए । दो पहर के खाने के लिये फ़ौरन **बा'दे नमाज़े ज़ोहर** और शाम के खाने के लिये **बा'दे नमाज़े इ़शा** मेहमानों को बुलाने में ग़ालिबन बा जमाअ़त नमाज़ों के लिये आसानी है । **मेज़बान, बावर्ची, खाना तक़्सीम करने वाले वग़ैरा** सभी को चाहिये कि वक़्त हो जाए तो सारा काम छोड़ कर बा जमाअ़त नमाज़ का एहतिमाम करें । शादी या दीगर तक़रीबात वग़ैरा और **बुज़ुर्गों की "नियाज़" की मस्रूफ़िय्यत में अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ

की (हुक्म कर्दा) ''नमाज़े बा जमाअ़त'' में कोताही बहुत बड़ी ग़-लती़ है ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمّد

म-दनी दा'वत नामा

एक मरतबा म-दनी मुज़ा-करे के दौरान **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ से अ़र्ज़ की गई कि हुज़ूर ! आप ने शादी का दा'वत नामा सब से पहले किस के नाम लिखा ? तो कुछ यूं इर्शाद फ़रमाया ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ जब से होश संभाला **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के सदके़ से मेरी महब्बतें **सरकार** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये ही हैं, यक़ीनन सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से हर मुसल्मान को मह़ब्बत है और होनी भी चाहिये कि **''لَا اِیْمَانَ لِمَنْ لَا مَحَبَّۃَ لَہٗ''** (या'नी जिसे सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मह़ब्बत नहीं उस का ईमान कामिल नहीं) हर एक की मह़ब्बत का अपना अन्दाज़ होता है, मेरा भी **सरकार** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मह़ब्बत का एक अन्दाज़ था कि मैं चाहता था कि **सरकार** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में दा'वत पेश करूं । **लेकिन सोचता था कि कैसे पेश करूं ?** मैं मुसल्सल येह सोचता रहा फिर आख़िरे कार मुझ से जो मुम्किन हुवा मैं ने शादी कार्ड पर **अल्क़ाबात** लिखे और एक मदीने के मुसाफ़िर के हाथ **''शादी कार्ड''** मदीने शरीफ़ भेज दिया ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ एक इस्लामी भाई ने सुनहरी जालियों के सामने पढ़ कर सुनाया । **निकाह़** वाले दिन मेरी अ़जीब कैफ़िय्यत थी मैं मुज़्तरिब था कि मेरे **मीठे मीठे, मन मोहने, आक़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **कब तशरीफ़ लाते हैं ?** बस येह मेरा एक अन्दाज़ था ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।**

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

शबे उ़रूसी में इन्फ़िरादी कोशिश

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ फ़रमाते हैं : शादी की मस्रूफ़िय्यात में दिन गुज़ार कर जब शबे उ़रूसी का वक़्त हुवा तो मेरे अन्वर[1] **(Side friend)** ने मुझे समझाना शुरूअ़ किया कि अगर तुम्हारी अहलिया उलटे हाथ से कोई चीज़ दे तो पहली रात ही रोक टोक शुरूअ़ मत कर देना (क्यूं कि अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की बहुत पुरानी आ़दते मुबा-रका है कि जब कोई आप को उलटे हाथ से चीज़ पकड़ाने की कोशिश करे तो आप دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ बड़े अह़सन अन्दाज़ में उस की इस्लाह़ फ़रमा देते हैं कि सीधे हाथ से चीज़ दीजिये कि सुन्नत है उलटे हाथ से देना शैत़ान का काम है ।) चूंकि वोह मेरी कैफ़िय्यत

1 : अन्वर उस शख़्स को बोलते हैं जो अपने तजरिबात की रोशनी में दूल्हा को ख़रीदारी और दीगर मुआ़-मलात में अपने मश्वरों से नवाज़ता है ।

से वाक़िफ़ थे, इसी के पेशे नज़र फिर समझाया कि "तुम हुसूले इ़ब्रत के लिये मौत की बातें करते रहते हो, पहली ही रात उस के सामने **मौत का तज़्किरा** मत छेड़ देना।" मैं ख़ामोशी से सुनता रहा।

इत्तिफ़ाक़न जब रात नौ बियाहता ने उलटे हाथ से कोई चीज़ देना चाही तो اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ह़स्बे आ़दत सीधे हाथ से देने की **तल्क़ीन** की नीज़ वोही **मौत का तज़्किरा** किया कि देखो येह ख़ुशियां जो हैं, येह सब आ़रिज़ी हैं, **मौत** तो दूल्हा को बारात से घसीट कर ले जाती है और दुल्हन को ह़-ज-लए ज़ूरूसी से उठा कर क़ब्र में डाल देती है। इस त़रह़ उन का म-दनी ज़ेह़न बनाने की कोशिश की।

नेल पोलिश क्यूं नहीं लगाई ?

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मज़ीद फ़रमाते हैं कि मैं ने (नाख़ुनों को देखते हुए) पूछा : "**नेल पोलिश** कहां है ?" कहा : "नहीं लगाई।" पूछा : "क्यूं ?" कहा कि "**वुज़ू** नहीं होता।" येह सुन कर मेरा दिल बहुत ख़ुश हुवा कि مَاشَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इन का पहले से ही ज़ेह़न बना हुवा है। वरना मैं ने **नेल पोलिश** उतारने वाला लोशन ले रखा था कि अगर **नेल पोलिश** लगाई हुई तो साफ़ कर दूंगा। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ उस के **इस्ति'माल** की ज़िन्दगी में कभी **नौबत** ही नहीं आई।

म-दनी फूल : ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِى लिखते हैं : आजकल (औ़रतों में) नाख़ुन पर पोलिश

लगाने का रवाज है मगर पॉलिश में जसामत होती है इस लिये अगर नाख़ुनों पर लगी होगी तो औरत का **वुज़ू या ग़ुस्ल न होगा** कि पॉलिश के नीचे पानी न पहुंचेगा। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 6, स. 175) लिहाज़ा अगर नेल पॉलिश नाख़ुनों पर लगी हुई हो तो इस का छुड़ाना फ़र्ज़ है वरना वुज़ू व ग़ुस्ल नहीं होगा। (इस्लामी बहनों की नमाज़, स. 54)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

शबे उ़रूसी में बयान की केसिट सुनी !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की येह इन्फ़िरादी कोशिश बहुत से इस्लामी भाइयों के लिये मश्अ़ले राह बनी, चुनान्चे जामिअ़तुल मदीना (कन्ज़ुल ईमान मस्जिद बाबरी चोक बाबुल मदीना कराची) के एक त़ालिबे इ़ल्म का बयान कुछ यूं है कि 15 शा'बान 1425 सि.हि. में (कि जब मैं द-र-जए ख़ामिसा का त़ालिबे इ़ल्म था) अपनी **शादी** के मौक़अ़ पर मैं ने रहनुमाई के लिये **मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी** अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी मौलाना मुह़म्मद फ़ारूक़ अ़त्त़ारी अल म-दनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِي जो कि मेरे उस्ताज़ भी थे, उन से कुछ शर-ई मसाइल पूछे जिस के जवाबात देने के बा'द आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए मुझे शबे उ़रूसी में केसिट **इज्तिमाअ़** की तरग़ीब दिलाई कि इस त़रह़ आप दोनों को रहनुमाई के मु-तअ़द्दद म-दनी फूल मिलेंगे। चुनान्चे मैं ने शबे उ़रूसी

की इब्तिदा में अपनी दुल्हन के साथ बैठ कर **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के बयान की केसिट **''मियां बीवी के हुक़ूक़''** सुनी जिस से हमें मा'लूमात का **अनमोल ख़ज़ाना** हाथ आया ।[1]

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बारगाहे रिसालत में सलातो सलाम पेश किया

दा'वते इस्लामी के तह़क़ीक़ी व इशाअ़ती इदारे अल मदीनतुल इल्मिय्या से वाबस्ता एक म-दनी इस्लामी भाई ने भी म-दनी मुज़ा-करे में **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की येही ह़िकायत सुन कर अपना ज़ेह्न बनाया और शबे ज़िफ़ाफ़ में सब से पहले अपनी दुल्हन के साथ मिल कर बारगाहे रिसालत (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) में **सलातो सलाम** का नज़राना पेश किया और **दुआ** भी मांगी ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नमाज़े फ़ज्र की बा जमाअ़त अदाएगी

(**अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मज़ीद फ़रमाते हैं कि) **''अन्वर''** ने मश्वरा दिया था कि शबे ज़िफ़ाफ़ गुज़ार कर नमाज़े फ़ज्र घर ही पर अदा कर लेना मगर اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ शबे ज़िफ़ाफ़ की सुब्ह़

1: اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने दूल्हा और दुल्हन के लिये दुआ़इय्या मन्ज़ूम म-दनी सेहरे और इस्लाह़ के म-दनी फूलों पर मुश्तमिल सुन्नतों भरे **मक्तूबात** भी मुरत्तब फ़रमाए हैं । येह म-दनी सेहरे और मक्तूबात इसी रिसाले के आख़िरी सफ़ह़ात में पेश किये गए हैं ।

मस्जिदे नूर (जहां इमामत की ज़िम्मेदारी थी) **में नमाज़े फ़ज्र की इमामत की सआ़दत पाई ।** फिर जब ''अन्वर'' से मुलाक़ात हुई तो उस ने बड़ा तअ़ज्जुब किया कि शादी की पहली रात गुज़ार कर फ़ज्र पढ़ाई ! येह कैसे पढ़ाई ? मैं ने कहा : ''اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ पढ़ाई और कोई ग़-लती भी नहीं हुई, येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का करम है ।''

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ह़िकायत में उन दूल्हा साह़िबान के लिये दर्स पोशीदा है जो **नमाज़** के पाबन्द होते हुए भी **शबे उ़रूसी** में शर्मो ह़या की वजह से ग़ुस्ल नहीं करते और नमाज़े फ़ज्र क़ज़ा कर देते हैं (مَعَاذَاللّٰہِ عَزَّوَجَلَّ) ह़ालां कि ऐसा करना शर्मो ह़या नहीं बल्कि परले दरजे की **ह़माक़त** और **ह़राम** और **जहन्नम में ले जाने** वाला काम है ।

अमीरे अहले सुन्नत का वलीमा

उन दिनों में भी कि जब टेबल कुर्सियां सजा कर बड़े करों फ़र के साथ वलीमे किये जाते थे, **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ का वलीमा शबे ज़िफ़ाफ़ के दूसरे दिन सुन्नत के मुत़ाबिक़ ऐसी सा-दगी के साथ हुवा था कि जिस त़रह़ **नियाज़** वग़ैरा में खिलाया जाता है इसी

त़रह़ मेहमानों को दरी पर बिठा कर थालों में खाना पेश किया गया। खाने में सिर्फ़ अक्नी **चावल** (या'नी पुलाव) और ज़र्दा था। **मकान** के बैरूनी हि़स्से पर किसी क़िस्म की मुरव्वजा **सजावट या बर्क़ी क़ुमक़ुमों** की तरकीब न थी, टेप पर सिर्फ़ **ना'तें** चलाने का सिल्सिला था।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"वलीमा सुन्नत है" के दस हुरूफ़ की निस्बत से वलीमा के 10 म-दनी फूल

(अज़ : शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه)

(1) दा'वते वलीमा **सुन्नत** है। वलीमा येह है कि शबे ज़िफ़ाफ़ की सुब्ह़ को अपने दोस्त अह़बाब अ़ज़ीज़ो अक़ारिब और मह़ल्ले के लोगों की ह़स्बे इस्तित़ाअ़त **ज़ियाफ़त** करे।

(2) वलीमे के लिये बहुत ज़ियादा भीड़ करना **शर्त़** नहीं है, दो तीन दोस्त या रिश्तेदार हों तो भी वलीमा हो सकता है।

(3) इस के लिये पन्दरह क़िस्म की डिशें बनाने की भी कोई ज़रूरत नहीं, ह़स्बे हैसिय्यत दाल चावल या गोश्त वग़ैरा जो भी **खाना** आप पेश कर सकते हैं, पेश कर दीजिये **वलीमा** हो जाएगा।

(4) जो लोग वलीमे में बुलाए जाएं उन को **जाना चाहिये** कि उन का जाना दूल्हा और उस के घर वालों के लिये **मुसर्रत** का बाइ़स होगा।

(5) दा'वते वलीमा का येह हुक्म जो बयान किया गया है, उस वक़्त है कि दा'वत करने वालों का मक़्सूद **अदाए सुन्नत** हो और अगर मक़्सूद तफ़ाख़ुर (या'नी फ़ख़्र जताना) हो या येह कि मेरी **वाह वाह** होगी जैसा कि इस ज़माने में अक्सर येही देखा जाता है, तो ऐसी दा'वतों में न शरीक होना **बेहतर** है ख़ुसूसन अहले इल्म को ऐसी जगह न जाना चाहिये।

(6) दा'वत में जाना उस वक़्त सुन्नत है जब मा'लूम हो कि वहां **गाना बजाना, लह्वो लइब** नहीं है और अगर मा'लूम है कि येह **ख़ुराफ़ात** वहां हैं तो न जाए।

(7) जाने के बा'द मा'लूम हुवा कि यहां लग़्विय्यात हैं, अगर वहीं येह चीज़ें हों तो **वापस** आए और अगर मकान के दूसरे हिस्से में हैं जिस जगह खाना खिलाया जाता है वहां नहीं हैं तो वहां **बैठ** सकता है और खा सकता है फिर अगर येह शख़्स उन लोगों को रोक सकता है तो **रोक** दे और अगर इस की क़ुदरत उसे न हो तो सब्र करे।

(8) येह इस सूरत में है कि येह शख़्स मज़्हबी पेश्वा न हो और अगर **मुक़्तदा** व पेश्वा हो, म-सलन उ़-लमा व मशाइख़, येह अगर न रोक सकते हों तो वहां से **चले** आएं न वहां बैठें न खाना खाएं और पहले ही से येह मा'लूम हो कि वहां येह चीज़ें हैं तो **मुक़्तदा** हो या न हो किसी को जाना **जाइज़** नहीं अगर्चे ख़ास उस हिस्सए मकान में येह

चीज़ें न हों बल्कि दूसरे हिस्से में हों।

(9) अगर वहां **लह्वो लइब** हो और येह शख़्स जानता है कि मेरे जाने से येह चीज़ें **बन्द** हो जाएंगी तो उस को इस निय्यत से जाना चाहिये कि उस के जाने से मुन्करात शर-इय्या (या'नी गुनाहों के काम) रोक दिये जाएंगे और अगर मा'लूम है कि वहां न जाने से उन लोगों को नसीह़त होगी और ऐसे मौक़अ़ पर येह **ह़-र-कतें** न करेंगे, क्यूं कि वोह लोग इस की शिर्कत को ज़रूरी जानते हैं और जब येह मा'लूम होगा कि अगर शादियों और तक़रीबों में येह चीज़ें होंगी तो वोह शख़्स **शरीक** न होगा तो उस पर लाज़िम है कि वहां न जाए ताकि लोगों को **इ़ब्रत** हो और ऐसी ह़-र-कतें न करें।

(10) **दा'वते वलीमा** सिर्फ़ पहले दिन है या उस के बा'द दूसरे दिन भी या'नी दो[2] ही दिन तक येह **दा'वत** हो सकती है, इस के बा'द वलीमा और शादी ख़त्म। पाक व हिन्द में **शादियों** का सिल्सिला कई दिन तक क़ाइम रहता है। सुन्नत से आगे बढ़ना **रिया व सुम्अ़ा** है इस से बचना ज़रूरी है।

(माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 16, स. 34 ता 36)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

चटाई की सुन्नत

(अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं) **मैं** ने येह

पढ़ और सुन रखा था कि **सरकार** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم चटाई बल्कि फ़र्शे ख़ाक पर सोते थे। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ बरसों से मेरी चटाई पर सोने की आ़दत थी। शादी की पहली रात के बा'द मैं फिर अपनी **चटाई** पर था। पलंग आहिस्ता आहिस्ता स्टोर रूम में मुन्तक़िल हो गया और इस के बा'द घर का फ़ाज़िल सामान पलंग पर रख दिया गया। अब भी हमारे घर में **सोफ़ा** सेट है न **पलंग**, हां घर की बालाई मन्ज़िल में जो **किताब घर** है वहां एक सोफ़ा मौजूद है जिस पर मैं कभी कभी बैठ जाता हूं, इस्लामी भाइयों में से किसी ने ला कर रख दिया, अपने उस मेहरबान का नाम अब भी मुझे नहीं मा'लूम।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जहेज़ के हुक़ूक़

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने एक बार फ़रमाया, चूंकि जहेज़ शर-ई तौ़र पर बीवी की मिल्क होता है इस लिये मैं ने अपने बच्चों की वालिदा से एक बार नहीं बल्कि मुख़्तलिफ़ मवाक़ेअ़ पर जहेज़ से मु-तअ़ल्लिक़ **हुक़ूक़ मुआ़फ़** करवाएं हैं। एक बार एक चुटकुला यूं हुवा कि मैं ने बच्चों की वालिदा से जहेज़ से मु-तअ़ल्लिक़ जब **एह़तियात़न मुआ़फ़ी** मांगी तो उन्हों ने कहा : **''एक बार मुआ़फ़**

कर तो दिया अब कब तक मुआ़फ़ी मांगते रहेंगे ?"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को एक बेटी और दो बेटों से नवाज़ा है। बेटों के नाम (1) अल्ह़ाज मौलाना अबू उसैद **अह़मद उ़बैद रज़ा क़ादिरी** र-ज़वी अ़त्तारी अल म-दनी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِى और (2) ह़ाजी **मुह़म्मद बिलाल** रज़ा अ़त्तारी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِى हैं। अल्लाह तआ़ला इन को दराज़िये उ़म्र बिलखै़र और दिन रात दा'वते इस्लामी के म-दनी कामों की धूमें मचाने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

शहज़ादए अ़त्तार مَدَّظِلُّهُ الْعَالِى की शादी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जहां **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने अपनी शादी ख़ाना आबादी में हर मौक़अ़ पर शर-ई अह़काम की पासदारी की, वहीं आप ने अपने शहज़ादए ख़ुश लिक़ा, उ़रूसे दिलरुबा, अलह़ाज मौलाना अबू उसैद **अह़मद उ़बैदुर्रज़ा क़ादिरी** र-ज़वी अ़त्तारी अल म-दनी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की "**शादी**" के पुर मुसर्रत लम्ह़ात में तमाम मुआ़-मलात शरीअ़त के ऐ़न मुत़ाबिक़ रखने पर भी भरपूर तवज्जोह फ़रमाई। जिस के नतीजे में

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ येह शादी मुबारक भी इन्तिहाई सा-दगी का मज़्हर और दौरे ह़ाज़िर की मिसाली शादी क़रार पाई ।

मरह़बा अ़त्तार का लख़्ते जिगर दूल्हा बना

ख़ुशनुमा सेहरा उ़बैदे क़ादिरी के सर सजा

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

तक़्रीबे निकाह़

शहज़ादए अ़त्तार مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی के **निकाह़** की तक़्रीब बर्क़ी कुमकुमों से जग-मगाते शादी हॉल के बजाए **मदीनतुल औलिया** मुलतान शरीफ़ में होने वाले **दा'वते इस्लामी** के तीन रोज़ा सुन्नतों भरे **बैनल अक़्वामी इज्तिमाअ़ में 18** अक्तूबर **2003** सि.ई. को शबे इतवार बड़ी सा-दगी के साथ अन्जाम पाई ।

बराती हैं तमामी अहले सुन्नत

उ़बैदे क़ादिरी दूल्हा बना है

तिलावत के बा'द पुरसोज़ ना'तें पढ़ी गईं, रिक़्क़त अंगेज़ समां था, ख़ुत्बए निकाह़ पढ़ कर **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه ही ने निकाह़ पढ़ाया फिर छूहारे लुटाए गए जो मन्च (स्टेज) के क़रीब मौजूद मख़्सूस इस्लामी भाइयों ने लूटे । निकाह़ के बा'द छूहारे लुटाने के बारे में आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि ''ह़दीस शरीफ़ में लूटने का हुक्म है और लुटाने में

भी कोई ह़रज नहीं। (अह़कामे शरीअ़त, स. 232)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

रुख़्सती की तारीख़

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का यौमे विलादत **10 शव्वालुल मुकर्रम** है लिहाज़ा इस निस्बत की ब-र-कतों के ह़ुसूल के लिये रुख़्सती की तक़रीब **शव्वालुल मुकर्रम 1426** सि.हि., **2005** सि.ई. की दसवीं शब रखी गई।

मैं इमाम अह़मद रज़ा का हूं ग़ुलाम
कितनी आ'ला मुझ को निस्बत मिल गई

(मुग़ीलाने मदीना)

मकान पर सजावट

इस मौक़अ़ पर देखने वाले ह़ैरत ज़दा थे कि दुन्याए अहले सुन्नत के अमीर, बानिये दा'वते इस्लामी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के शहज़ादे की शादी के मौक़अ़ पर घर पर मुरव्वजा **सजावट या बक़्क़ी क़ुमक़ुमों** वग़ैरा की कोई **तरकीब** ही नहीं थी।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

पुर तकल्लुफ़ जहेज़ लेने से इन्कार

ह़ाजी अह़मद ज़ुबैद रज़ा مَدَّظِلُّهُ الْعَالِي की शादी में जब लड़की वालों ने पुर तकल्लुफ़ जहेज़ देना चाहा तो **अमीरे अहले**

सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने उन्हें सा-दगी अपनाने की तल्क़ीन की। दूसरी त़रफ़ **शहज़ादए अ़त्त़ार** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه भी पलंग वग़ैरा की बजाए चटाई क़बूल करने पर रिज़ा मन्द हुए।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त

शहज़ादए अ़त्त़ार مَدَّظِلُّهُ الْعَالِي की शादी की ख़ुशी में **दा'वते इस्लामी** की बाबुल मदीना (कराची) की मजलिसे मुशा-वरत ने आ़लमी म-दनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** (बाबुल मदीना कराची) में **इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त** का एहतिमाम किया जिस में हज़ारों इस्लामी भाइयों ने शिर्कत की। इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त का आग़ाज़ **तिलावते क़ुरआने ह़कीम** से हुवा, फिर **सरकारे मदीना**, सुरूरे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में गुलहाए अ़क़ीदत **ना'त** शरीफ़ की सूरत में पेश किये गए। इस के बा'द शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने इस मौक़अ़ पर **म-दनी मुज़ा-करा** में इस्लामी भाइयों के सुवालात के जवाबात दिये। फिर **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का लिखा हुवा मन्ज़ूम दुआ़इय्या सेहरा शरीफ़ पढ़ा गया और **सलातो सलाम** पर इस **इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त** का इख़्तिताम हुवा।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

छूहारे क्यूं नहीं बांटे ?

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने कुछ यूं इर्शाद फ़रमाया : मुझ से इसरार किया गया कि इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त के शु-रका में कोई **चीज़** तक़्सीम की जाए, किसी ने येह मश्वरा भी दिया कि **चल मदीना** के 7 हुरूफ़ की निस्बत से सात सात छूहारों पर मुश्तमिल पेकेट तक़्सीम कर दिये जाएं, इस के नुमूने (सेम्पल, sample) भी आ गए थे मगर मैं ने **मन्अ़** कर दिया इस लिये नहीं कि **रक़म** बहुत ख़र्च होती बल्कि येह सोच कर कि येह छूहारे हम बांटेंगे किस जगह ? अगर **मस्जिद** में बांटते हैं तो रश की वजह से मस्जिद में शोरो गुल होगा जो **एह़तिरामे मस्जिद** के मुनाफ़ी है और अगर बाहर बांटते हैं तो रास्ते बन्द हो जाने का ख़दशा है जिस से गुज़रने वालों की **ह़क़ तलफ़ी** होगी। फिर अ़वाम के जम्मे ग़फ़ीर को **क़ाबू** करना बेह़द मुश्किल है, छीना झपटी में ज़ोरआवर तो शायद कई कई पेकिट ले उड़े मगर जो बेचारा कमज़ोर होगा हुजूम में पिस कर रह जाए, लिहाज़ा समझ नहीं पड़ती थी कि कहां बांटें ? चुनान्चे तै़ हुवा कि **छूहारे नहीं बांटे जाएंगे**।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ग़ौसे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ और आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की तशरीफ़ आ-वरी

एक इस्लामी भाई का बयान है कि इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त के

आख़िरी लम्हात में जब मन्च पर **शहज़ादए अ़त्तार** مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی और **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه तशरीफ़ फ़रमा थे और **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का तह़रीर कर्दा मन्ज़ूम दुआ़इय्या सेहरा पढ़ा जा रहा था। (जिस के अश्आ़र सफ़ह़ा 71 पर पेश किये गए हैं।) उन इस्लामी भाई का कहना है कि इस दौरान मेरी आंख लग गई, क्या देखता हूं कि दो बुज़ुर्ग तशरीफ़ लाए, मुझे बताया गया कि इन में एक **ह़ुज़ूर सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म** رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ और दूसरे आ'ला ह़ज़रत इमाम **अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن हैं। फिर दोनों बुज़ुर्गों ने **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه और **शहज़ादए अ़त्तार** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के गले में हार पहनाए।

इन की शादी ख़ाना आबादी हो रब्बे मुस्त़फ़ा

अज़ पए ग़ौसुल वरा बहरे इमाम अह़मद रज़ा

(अरमुग़ाने मदीना)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

रस्मे सुरख़्सती

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने पहले ही से ताकीद कर दी थी कि किसी सूरत में कोई ग़ैर शर-ई रस्म या मुआ़-मला न होने पाए बल्कि वक़्ते रुख़्सती भी तमाम मुआ़-मलात ऐन शरीअ़त के

दाएरे में रहते हुए होने चाहिऐं। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ आप की इस ख़्वाहिश को अ़-मली जामा पहनाया गया और आख़िर तक हर हर मुआ़-मला ऐ न **शरीअ़त** के मुत़ाबिक़ रखने की ही कोशिश की गई। ह़त्ता कि **रुख़्सती** के वक़्त जो ख़वातीन दुल्हन को छोड़ने के लिये रस्म के त़ौर पर आती हैं उस से पेशगी मन्अ़ कर दिया गया कि सिर्फ़ दुल्हन का सगा भाई शर-ई **पर्दे** के साथ दुल्हन को ले आए। इस शादी में अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के घर वालों की त़रफ़ से भी इस्लामी बहनों के लिये कोई तक़्रीब नहीं रखी गई थी।

मेरी जिस कदर हैं बहनें सभी काश बुर्क़अ़ पहनें
हो करम शहे ज़माना म-दनी मदीने वाले

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बा जमाअ़त नमाज़े फ़ज्र

शबे ज़िफ़ाफ़ की सुब्ह़ शहज़ादए अ़त्तार **हाजी अह़मद उ़बैद रज़ा** مَدَّظِلُّهُ الْعَالِي ने आ़लमी म-दनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** में ह़स्बे मा'मूल **नमाज़े फ़ज्र** पढ़ाई। इस त़रह़ उन्हों ने अपने वालिद या'नी **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की रिवायत को बर क़रार रखा कि उन्हों ने भी शबे ज़िफ़ाफ़ की सुब्ह़ मस्जिदे

नूर (काग़ज़ी बाज़ार बाबुल मदीना कराची) **में नमाज़े फ़ज्र की ह़स्बे मा'मूल इमामत फ़रमाई थी ।**

नमाज़ों में मुझे सुस्ती न हो कभी आक़ा

पढ़ूं पांचों नमाज़ें बा जमाअ़त या रसूलल्लाह

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

धूमधाम से वलीमा करने का मुत़ा-लबा

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने म-दनी मुज़ा-करे के दौरान कुछ यूं इर्शाद फ़रमाया **:** धूमधाम से **वलीमे** का भी बहुत इसरार रहा । किसी ने ऑफ़र भी की, कि 200 देगें बिला उजरत पका देंगे, बस **दो लाख** रुपै का सामान आएगा । मैं ने कहा **: दो लाख** रुपै तो मेरे पास नहीं हैं, मगर मेरे लिये **दो लाख** रुपै जम्अ़ करना मुश्किल भी नहीं है, बस येही होगा कि जिस से कहूंगा उस के दिल में मेरी जो इ़ज़्ज़त होगी वोह **ख़त्म** हो जाएगी, दो चार सेठों को फ़ोन कर दूंगा, थोड़ी सी **ख़ुशामद** करना पड़ेगी जो कि **मेरे मिज़ाज में नहीं है,** 200 की जगह 1200 देगें हो जाएंगी, यूं मेरे बेटे का वलीमा तो धूमधाम से होगा और आप लोग भी ख़ुश हो जाएंगे मगर मुझे इस के लिये अपनी ख़ुद्दारी का सौदा करना पड़ेगा । फिर आप ने बत़ौरे तरग़ीब एक वाक़िआ़ भी सुनाया **:**

एक पीर साहि़ब के हां लंगर ख़ाना चल रहा था। एक साहि़बे सरवत मुरीद पैसे देने की तरकीब कर रहा था। लंगर ख़ाने के मुन्तज़िम ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! अब महंगाई बढ़ गई है, बहुत दिक़्क़त हो रही है, अगर आप इस लंगर ख़ाने का ख़र्चा देने वाले **मुरीद** को इशारा कर देंगे कि वोह रकम् **दुगनी** कर दे तो अपना लंगर ख़ाना ज़रा आसानी से चलेगा। पीर साहि़ब इस पर राज़ी हो गए और उस **मुरीद** को फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने तुझे बहुत दिया है, तुम माहाना चन्दा दुगना कर दो। उस मुरीद ने सआ़दत मन्दी से जवाब दिया : मुर्शिद आप का हुक्म सर आंखों पर। कुछ अ़र्से के बा'द लंगर ख़ाने के मुन्तज़िम ने पूछा, हुज़ूर ! आप ने रक़म में इज़ाफ़े के लिये कहा या नहीं ? पीर साहि़ब ने फ़रमाया कि मैं ने उस से कह दिया था और उस ने दुगना भी कर दिया है मगर फ़र्क़ येह है पहले बड़ी अ़क़ीदत से आ कर पेश करता था, अब ख़ुद नहीं आता भिजवा देता है।

(फिर अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने फ़रमाया) اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ (سَلَّمَهُ الْغَنِی) मेरा बेटा (या'नी हाजी अह़मद उ़बैद रज़ा अ़त्तारी) ख़ुद **वलीमा** की सुन्नत अदा करेगा। धूमधाम से न सही मगर वलीमा होगा।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दा'वते वलीमा

शहज़ादए अ़त्तार مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی ने **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ह़स्बे ख़्वाहिश इन्तिहाई सा-दगी से दा'वते वलीमा का एहतिमाम फ़रमाया जिस में सिर्फ़ दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा के तमाम अराकीन और तीन या चार दूसरे इस्लामी भाइयों को मद्ऊ़ किया लेकिन खाने के वक़्त घर के बाहर जम्अ़ होने वाले दीगर अ़क़ीदत मन्द इस्लामी भाइयों को भी अन्दर बुलवा लिया गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه भी वलीमे में शरीक थे। दा'वते वलीमा में **दाल** और **चावल** पेश किये गए। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने बताया कि "खाना घर में पकाया गया है, दाल **पानी** में पकाई गई है और इस में **तेल** का एक क़त़रा भी नहीं डाला गया।" मगर खाने वालों का कहना है कि दाल चावल ह़ैरत अंगेज़ त़ौर पर इन्तिहाई **लज़ीज़** थे।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

शहज़ादए अ़त्तार को मिलने वाले तह़ाइफ़

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की त़रफ़ से दी गई म-दनी सोच के बाइ़स दुन्या भर से इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों ने दुन्यवी तह़ाइफ़ के बजाए बहुत से नेक आ'माल म-सलन **हज़ारों क़ुरआने पाक, दुरूदे पाक** और मुख़्तलिफ़ **अज़्कार, म-दनी**

इन्आ़मात और कई इस्लामी भाइयों ने **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र करने और दीगर अच्छी अच्छी निय्यतों के सवाब के तोह़फ़े पेश किये।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

एक लाख रुपै का चेक लौटा दिया

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का मुक़द्दस घराना दुन्यवी माल से किस क़दर अपना दामन बचाता है ? इस का अन्दाज़ा इस बात से लगाइये कि माली तोह़फ़े देने से **मन्अ़** करने के बा वुजूद जब एक इस्लामी भाई ने **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की बारगाह में **शहज़ादए हुज़ूर** مَدَّظِلُّهُ الْعَالِى के लिये 100000/- (एक लाख रुपै) का चेक बत़ौरे तोह़फ़ा भिजवाया तो **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने शुक्रिया के साथ वापस करते हुए तह़रीरी पैग़ाम भेजा कि बराए करम ! दोबारा इस के लिये इसरार न फ़रमाएं। बा'द अज़ां चेक देने वाले इस्लामी भाई के घर वालों की त़रफ़ से **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के घर उन की बड़ी हमशीरा के पास **एक लाख रुपै नक़्द** पहुंचाने की कोशिश की गई मगर वहां भी उन्हें मायूसी हुई क्यूं कि उन्हों ने भी रक़म लेने से मा'ज़िरत कर ली और शुक्रिया के साथ पैसे वापस कर दिये।

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की हमशीरा का कहना है कि जब मैं ने **ह़ाजी अह़मद उ़बैद रज़ा** को 100000/- रुपै के तोह़फ़े के बारे में बताया तो शहज़ादे ने बताया : "चेक की सौग़ात सब से पहले मेरे पास ही पहुंची थी मगर मेरे इन्कार करने पर ही उन्हों ने बापाजान, फिर आप की ख़िदमत में पेश करने की कोशिश की ।"

न मुझ को आज़्मा दुन्या का मालो ज़र अ़त़ा कर के
अ़त़ा कर अपना ग़म और चश्मे गिर्यां या रसूलल्लाह

(अरमुग़ाने मदीना)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

पसन्द का तोह़फ़ा

निगराने शूरा سَلَّمَهُ رَبُّ الْوَرٰى ने बताया कि मुझे कई मुख़्य्यर ह़ज़रात के फ़ोन आए जिन का करोड़ों का कारोबार है कि हम **शहज़ादए ह़ुज़ूर** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ख़िदमत में उन की पसन्द का तोह़फ़ा पेश करना चाहते हैं, मेहरबानी फ़रमा कर **शहज़ादए ह़ुज़ूर** مَدَّظِلُّهُ الْعَالِى से मा'लूम कर के बता दें । जब मैं ने **शहज़ादए अ़त्तार** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की बारगाह में तोह़फ़े से मु-तअ़ल्लिक़ अ़र्ज़ की तो उन्हों ने मन्अ़ करते हुए फ़रमाया कि अगर वोह मुझे कुछ देना ही चाहते हैं तो **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल और **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र कर के उस के सवाब का तोह़फ़ा दे दें ।

दुन्या परस्त ज़र पे मरे गुल पे अ़न्दलीब

अपना तो इन्तिख़ाब मदीने का है बबूल

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बिन्ते अ़त्तार का जहेज़

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُھُمُ الْعَالِیَه ने अपनी इक्लौती बेटी की शादी भी सा-दगी को मल्हूज़ रखते हुए **ऐन सुन्नत के मुताबिक़** करने की कोशिश फ़रमाई थी। **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُھُمُ الْعَالِیَه ने एक म-दनी मुज़ा-करे में कुछ यूं इर्शाद फ़रमाया : मैं ने पूरी कोशिश की, कि ह़ज़रते सय्यि-दतुना **फ़ातिमा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا को मेरे **आक़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जो जो इनायत फ़रमाया उस की पैरवी की जाए,

वासिते जिन के बने दोनों जहां

उन के घर थीं सीधी साधी शादियां

उस जहेज़े पाक पे लाखों सलाम

साह़िबे लौलाक पर लाखों सलाम

(दीवाने सालिक)

म-सलन **मश्कीज़ा**, **गेहूं पीसने वाली हाथ की चक्की**, **नुक़्रई** (या'नी चांदी के) **कंगन** पेश किये, इसी त़रह़ की दीगर चीज़ें किताबों से देख कर जो जो मुयस्सर आया : **चटाई**, **मिट्टी के बरतन** और खजूर की छाल भरा **चमड़े का तक्या** वग़ैरा, اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ **जहेज़** में पेश करने की कोशिश की[1]

1. सामाने जहेज़ की तस्वीर आख़िरी सफ़ह़े पर मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये।

और रुख़्सत करते वक़्त जिस त़रह़ सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ातूने जन्नत फ़ाति-मतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا पर शफ़्क़तें फ़रमाई थीं[1], اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन सुन्नतों पर भी अ़मल करने की कोशिश की थी।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تعالٰى على محمّد

---

1. इमाम जज़री शाफ़ेई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه **हिस्ने ह़सीन** में नक़्ल फ़रमाते हैं कि जब हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते ख़ातूने जन्नत फ़ाति-मतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا का अ़क़्दे निकाह़ ह़ज़रते अमीरुल मुअमिनीन अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से किया तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم घर में तशरीफ़ लाए और ह़ज़रते ख़ातूने जन्नत رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا से फ़रमाया : पानी लाओ, वोह पियाले में पानी लाईं आप ने उस में से पानी ले कर उस में कुल्ली की फिर फ़रमाया : आगे आओ, जब वोह आगे आईं तो उन के सीने के दरमियान और सर पर पानी छिड़का और दुआ़ की : ''اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اُعِيْذُهَابِکَ وَذُرِّيَّتَهَا مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم या'नी इलाही ! मैं इस को और इस की औलाद को शैत़ान मरदूद से तेरी पनाह में देता हूं।'' फिर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : पुश्त फेरो जब उन्हों ने पुश्त फेरी तो उन के दोनों कांधों के दरमियान पानी छिड़का और दुआ़ की (या'नी मज़्कूरा बाला दुआ़ जो तरजमे के साथ गुज़री) फिर हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया : पानी लाओ, ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं कि मैं समझ गया कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ ही से फ़रमाया है। चुनान्चे मैं उठा और पानी का पियाला भर लाया। हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उस पियाले से पानी ले कर उस में कुल्ली की फिर फ़रमाया : आगे आओ (चुनान्चे मैं आगे आया) तो आप ने मेरे सर और सामने के जिस्म पर पानी डाला फिर दुआ़ फ़रमाई : اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اُعِيْذُهٗ بِکَ وَذُرِّيَّتَهٗ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم या'नी इलाही ! मैं इस को और इस की औलाद को शैत़ान मरदूद से तेरी पनाह में देता हूं।'' फिर फ़रमाया : पुश्त फेरो मैं ने पुश्त फेरी तो आप ने मेरे कांधों के दरमियान पानी डाला और दुआ़ फ़रमाई (या'नी मज़्कूरा बाला दुआ़ जो तरजमे के साथ गुज़री) फिर हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने (ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से) फ़रमाया कि तुम अल्लाह तआ़ला के नाम और ब-र-कत से अपनी ज़ौजा के पास जाओ।

(المعجم الكبير للطبرانی، الحديث ١٠٢١، ج٢٢، ص٤٠٩ ماخوذاً والحصن الحصين، مايتعلق بامور الزواج، ص٧٦)

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की जानिब से "बिन्ते अ़त्तार और दामादे अ़त्तार" के लिये इस्लाही म-दनी फूलों का गुलदस्ता

"दामादे अ़त्तार" की ख़िदमत में घर चलाने के सिल्सिले में 12 म-दनी फूल

﴾1﴿ **हुक़ूक़े ज़ौजैन**, हुर्मते मुसा-हरत, नान नफ़्क़े का बयान, ज़िहार का बयान वग़ैरा (बहारे शरीअ़त हिस्सा : 7) का मुत़ा-लआ़ फ़रमा लीजिये।

﴾2﴿ **वालिदैन** और घर के दीगर अफ़राद की कमज़ोरियां और कोताहियां अपनी ज़ौजा को बता कर ग़ीबत और आबरू रेज़ी की आफ़त में मुब्तला न हों।

﴾3﴿ **इसी** त़रह़ की बातें ज़ौजा भी अगर करे तो उस से कहें صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب। और उसे ऐसी बातें करने से रोक दें वरना ग़ीबत सुनने के गुनाह में गिरिफ़्तार होंगे।

﴾4﴿ "हम तो बुरा किसी (मुसल्मान) का **देखें सुनें न बोलें**" येह उसूल अगर अपना लेंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मदीना ही मदीना।

﴾5﴿ औ़रत को **राज़ की बात** न बताएं।

बशर राज़े दिली कह कर ज़लीलो ख़्वार होता है
निकल जाती है जब ख़ुश्बू तो गुल बेकार होता है

﴾6﴿ **वालिदैन** का हर ह़ाल में एह़तिराम करें उन के हुक़ूक़ से आप किसी त़रह़ भी सुबुक दोश नहीं हो सकते ।

﴾7﴿ **औ़रत** टेढ़ी पस्ली से निकली है इस को **ह़िक्मते अ़-मली** से ही चलाने में काम्याबी है । बात बात पर ग़ुस्सा या डांट डपट करने से बिदक जाने का अन्देशा है ।

﴾8﴿ **शोहर** ह़ाकिम होता है और बीवी मह़कूम । लिहाज़ा ज़ियादा **Free** न हों वरना **रो'ब** ख़त्म हो जाने की सूरत में ''ह़ाकिमिय्यत'' (की धाक) ज़ाएअ़ हो सकती है ।

﴾9﴿ **धोने** पकाने का काम ज़ौजा ही के ज़िम्मे लगाएं । (उस के साथ) बिला ज़रूरत किया जाने वाला तआ़वुन हो सकता है उसे **सुस्त** बना दे ।

﴾10﴿ **खिड़कियों** और बरआमदों से (बिला उ़ज़्रे सह़ीह़) झांकना शु-रफ़ा का काम नहीं । आप भी एह़तियात़ करें और अपनी ज़ौजा पर भी सख़्ती से पाबन्दी डालें ज़रूरतन झांकना पड़े तो येह एह़तियात़ बहर ह़ाल ज़रूर रखें कि (ना मह़रमों और) पड़ोसियों के घरों में नज़र न पड़े ।

﴾11﴿ म-दनी इन्आ़मात पर आप भी अ़मल करें और बिन्ते अ़त्त़ार को सख़्ती से करवाएं ।

﴾12﴿ **बिन्ते अ़त्त़ार** मह़ज़ बशर है, ग़-लत़ियों का हर इम्कान

मौजूद है अगर इस का तज़्किरा आप ने अपने वालिदैन या अफ़्रादे ख़ाना से किया तो ग़ीबत के गुनाह के साथ साथ "**दा'वते इस्लामी**" को भी नुक़्सान पहुंच सकता है। आप अह़्सन त़रीक़े से इस्लाह़ की सअ़्य फ़रमाएं। नाकामी की सूरत में इस्लाह़ करवाने की निय्यत से सिर्फ़ मुझ से रुजूअ़ कीजिये।

(13 मुह़र्रमुल ह़राम 1418 सि.हि.)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

घर को ख़ुशियों का गहवारा बनाने और आख़िरत संवारने के लिये "अ़त्तार" (دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه) की त़रफ़ से "बिन्ते अ़त्तार" के लिये 12 म-दनी फूल

﴾1﴿ **शोहर** की त़रफ़ से मिलने वाला हर हुक्म जो ख़िलाफ़े शर-अ़ न हो, बजा लाना ज़रूरी है।

﴾2﴿ **अपने** शोहर और सास का खड़े हो कर इस्तिक़्बाल कीजिये और खड़े हो कर ही रुख़्सत भी कीजिये।

﴾3﴿ **दिन** में कम अज़ कम एक बार (मुम्किन हो तो) सास की **दस्त बोसी** कीजिये।

﴾4﴿ **अपनी** सास और सुसर का वालिदैन की त़रह़ **इक्राम** कीजिये। उन की आवाज़ के सामने अपनी **आवाज़ पस्त** रखिये। उन के और अपने शोहर के सामने "**जी जनाब**" से बात कीजिये।

﴾5﴿ **शोहर** ज़रूरतन सज़ा देने का मजाज़ है।[1] ऐसा हो तो **सब्रो तह़म्मुल** का मुज़ा-हरा कीजिये, ग़ुस्सा कर के या ज़बान दराज़ी कर के घर से रूठ कर आ जाने की सूरत में **आप पर ''मयके'' के दरवाज़े बन्द हैं।**

﴾6﴿ **हां** बिग़ैर रूठे **शोहर की इजाज़त** की सूरत में जब चाहें मयके आ सकती हैं।

﴾7﴿ **अपने** मयके की कोताहियां शोहर को बता कर ग़ीबत के **गुनाहे कबीरा** में न ख़ुद मुब्तला हों न अपने शोहर को **''सुनने''** के गुनाहे कबीरा में मुलव्वस करें।

﴾8﴿ **अपनी** ''बे अ़-मली'' या ''ला इ़ल्मी'' को ढांपने के लिये इस त़रह़ कह देना कि ''मुझे तो वालिदैन ने येह नहीं सिखाया'' सख़्त ह़माक़त है।

﴾9﴿ **बहारे शरीअ़त** ह़िस्सा 7 ''नान नफ़्क़ा का बयान'', ''ज़ौजैन के ह़ुक़ूक़'' वग़ैरा का मुत़ा-लआ़ कर लीजिये।

﴾10﴿ **अपने** लिये किसी क़िस्म का **''सुवाल''** अपने शोहर से कर के

1 : मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان सू-रतुन्निसाअ की आयत नम्बर 34 के तह़्त लिखते हैं : रब तआ़ला ने यहां उन की (या'नी बीवियों की) इस्लाह़ की तीन सूरतें बयान फ़रमाईं : (1) नसीह़त करना (2) बाएकाट करना (3) मारना। (मज़ीद लिखते हैं) ना फ़रमानी पर ख़ावन्द मार सकता है मगर इस्लाह़ की मार मारे न कि ईज़ा (या'नी तक्लीफ़ देने) की जैसे शागिर्द को उस्ताद या औलाद को मां बाप इस्लाह़ के लिये मारते हैं। बिला क़ुसूर बीवी को मारना सख़्त मम्नूअ़ है जिस की पकड़ रब (عَزَّوَجَلَّ) के हां ज़रूर होगी। (तफ़्सीरे नईमी, जि. 5, स. 61) बहारे शरीअ़त में है : ''बीवी नमाज़ न पढ़े तो शोहर उस को मार सकता है इसी त़रह़ तर्के ज़ीनत पर भी मार सकता है और (बिला इजाज़त) घर से बाहर निकल जाने पर भी मार सकता है।'' (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 16, स. 299)

उन पर बोझ मत बनना। हां अगर वोह मुक़र्रर कर्दा ह़क़ अदा न करें तो मांग सकती हैं।

﴾11﴿ **मेहमान** की ख़िदमत सआ़दत समझ कर करना, इस के अख़राजात के मुआ़-मले में शोहर पर बे जा बोझ मत डालना। **अपने वालिद** (या'नी सगे मदीना) **से त़लब कर लेना।** اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ मायूसी नहीं होगी और अगर वोह ख़ुश दिली से रिज़ा मन्द हों तो उन की सआ़दत मन्दी होगी।

﴾12﴿ **शोहर** की इजाज़त के बिग़ैर हरगिज़ **घर से न निकलें**। (इस्लामी बहनों को चाहें तो तोह़फ़े में इस तह़रीर की फ़ोटो कॉपी दे सकती हैं) (3 स-फ़रुल मुज़फ़्फ़र 1418 सि.हि.)

शादी के मौक़अ़ पर अमीरे अहले सुन्नत مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی की त़रफ़ से दूल्हा को दिया जाने वाला मक्तूब[1]

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم सगे मदीना **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी عُفِیَ عَنْہُ की जानिब से ग़ुलामे मुस्त़फ़ा गदाए ग़ौसुल वरा, साइले बारगाहे इमाम अह़मद रज़ा की ख़िदमते पुर मुसर्रत में मदीनए पाक زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا की रंगीन फ़ज़ाओं और मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَكْرِيْمًا की मुश्कबार हवाओं की ब-र-कतों, अ़-ज़-मतों, रिफ़अ़तों, सआ़दतों, शराफ़तों और करामतों से मालामाल ख़ुश गवार व ख़ुश्बूदार सलाम :

1. इस मक्तूब में ज़रूरतन तरमीम और रिवायात की तख़्रीज की गई है...(इल्मिय्या)

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُم وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ،
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْن عَلٰى كُلِّ حَال

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप को मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا के सदा बहार फूलों और नूरबार कांटों की त़रह़ लह-लहाता, मुस्कुराता और **जग-मगाता** रखे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप को ऐसी म-दनी बहारें नसीब फ़रमाए कि ख़ज़ां आप की त़रफ़ आंख उठा कर भी न देखे। **अल्लाह** तआ़ला आप को बार बार ह़ज की पुरकैफ़ बहारें और मदीनए पाक زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا के पाकीज़ा नज़ारे दिखाए। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप से हमेशा हमेशा के लिये राज़ी हो, आप को जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में अपने म-दनी मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस अ़त़ा करे, आप का सीना मदीना हो और मदीनए पाक زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا के बबूल के तुफ़ैल येह तमाम दुआ़एं मुझ पापी व बदकार के ह़क़ में भी क़बूल हों।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

आप की दुन्या व आख़िरत की बेहतरी के जज़्बे के तह़त मीठे मीठे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के 6 मीठे मीठे इर्शादात पेश करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं।

मदीना 1 : तुम जो कुछ भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा चाहते हुए ख़र्च करोगे

तुम्हें इस का **सवाब** दिया जाएगा यहां तक कि जो कुछ अपनी बीवी के मुंह में डालोगे उस का भी **सवाब** दिया जाएगा।" (صحیح البخاری، ج٤، ص١٢، حدیث ٥٦٦٨)

मदीना 2 : जो पाक दामनी चाहते हुए अपने आप पर ख़र्च करे तो येह उस के लिये **स-दक़ा** है और जो अपनी बीवी, बच्चों और घर वालों पर ख़र्च करे तो येह भी **स-दक़ा** है।" (مجمع الزوائد، ج٣، ص٣٠٢، حدیث ٤٦٦٦)

मदीना 3 : आदमी अगर अपनी ज़ौजा को पानी भी पिलाए तो उसे इस का अज्र मिलता है। (مسند امام احمد، مسندالشامیین، ج٦، ص٨٥، حدیث ١٧١٥٥)

आज कल बद क़िस्मती से सिर्फ़ बेटे ही की अक्सर लोग तमन्ना करते हैं अगर बेटी पैदा हो जाए तो बुरा मानते हैं, बेटी की फ़ज़ीलत पढ़िये और झूमिये :

मदीना 4 : जिस की लड़की हो और वोह उसे ज़िन्दा दफ़्न न करे और उस की तौहीन न करे और बेटों को उस पर तरजीह़ न दे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को **जन्नत** में दाख़िल फ़रमाएगा। (ابوداؤد، ج٤، ص٤٣٥، حدیث ٥١٤٦)

मदीना 5 : जिस को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने लड़कियां दी हों अगर वोह इन के साथ एह़सान करे तो वोह (लड़कियां) उस के लिये जहन्नम की आग से **रोक** हो जाएंगी। (مشکوٰۃ، ج٢، ص٢١٠، حدیث ٤٩٤٩)

मदीना 6 : जिस किसी की तीन बेटियां या तीन बहनें हों और वोह उन के साथ हुस्ने सुलूक करे तो जन्नत में दाख़िल होगा।

(جامع الترمذی، ج٣، ص٣٦٦، حدیث١٩١٩)

बीवी की बद अख़्लाक़ी पर सब्र कीजिये और अज्र कमाइये !

ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल ह़सन ख़िरक़ानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی का शोहरा सुन कर एक मो'तक़िद सफ़र कर के **ज़ियारत** के लिये आप के घर ह़ाज़िर हुवा। दस्तक दी और आमद का मक़्सद बताया। आप की ज़ौजा ने बताया वोह जंगल में लकड़ियां लेने गए हैं। और फिर वोह ह़ज़रत की बुराइयां बयान करने लगी। वोह मो'तक़िद परेशान हो कर **जंगल** की त़रफ़ गया, देखा तो दूर से एक शख़्स आ रहा है और उस के पीछे एक **शेर** चला आ रहा है जिस की पीठ पर लकड़ियों का गठ्ठा लदा हुवा है। आप رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने दूर ही से फ़रमाया : "मैं ही अबुल ह़सन ख़िरक़ानी हूं, अगर मैं अपनी बद मिज़ाज बीवी का **बोझ** बरदाश्त न करता तो क्या शेर मेरा **बोझ** उठा लेता ?"

(تذکرۃ الاولیاء، ص۱۷٤)

ख़बरदार ! अहलो इ़याल को ह़स्बे ज़रूरत अह़कामे शरीअ़त सिखाना ज़रूरी है। इस का एक ज़रीआ़ दा'वते इस्लामी का "म-दनी चेनल" भी है, **T.V.** सिर्फ़ इसी ग़-रज़ से लिया जाए और इस में तमाम चेनल्ज़ Lock कर के फ़क़त़ म-दनी चेनल ही बाक़ी रखा जाए। अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता उन्हें सिर्फ़ और सिर्फ़ उ़लूमे दुन्यवी ही सिखाए, नीज़

गुनाहों से बाज़ रखने के बजाए ख़ुद ही गुनाह करने के आलात म-सलन फ़िल्में और डिरामे वग़ैरा देखने के लिये **T.V.** और **V.C.R.** वग़ैरा का घर में एहतिमाम किया और शैत़ान के इस फ़रेब में मुब्तला हो गए कि घर में **T.V.** वग़ैरा का एहतिमाम नहीं करोगे तो तुम्हारे बच्चे दूसरों के घर जा कर फ़िल्में देखेंगे नीज़ अपने अहलो इ़याल को सूद व रिश्वत या ह़राम कमाई खिलाई तो आख़िरत ख़राब होने का अन्देशा है। एक इ़ब्रत नाक रिवायत पढ़िये और ख़ौफ़े ख़ुदा वन्दी से लरज़िये।

बरोज़े क़ियामत एक शख़्स बारगाहे ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ में ह़ाज़िर किया जाएगा, उस के बीवी बच्चे फ़रियाद करेंगे, **''या अल्लाह !** इस ने हमें दीन के अह़काम नहीं सिखाए और येह हमें **ह़राम** रोज़ी खिलाता था, लेकिन हम ला इ़ल्म थे। लिहाज़ा उस (शख़्स) को ह़राम रोज़ी के सबब इस क़दर पीटा जाएगा कि उस की खाल तो खाल गोश्त भी उधड़ जाएगा, फिर उस को मीज़ान (या'नी तराज़ू) पर लाया जाएगा, फ़िरिश्ते उस की पहाड़ के बराबर **नेकियां** लाएंगे तो अहलो इ़याल में से एक शख़्स उस की **नेकियों** में से ले लेगा। दूसरा बढ़ेगा वोह भी उस की **नेकियों** से अपनी कमी पूरी करेगा। इसी त़रह़ उस की सारी **नेकियां** उस के घर वाले ले लेंगे। अब वोह अपने बाल बच्चों की त़रफ़ रुख़ कर के कहेगा, ''अफ़्सोस ! अब मेरी गरदन पर सिर्फ़ उन **गुनाहों** का बोझ रह गया है जो मैं ने तुम लोगों की ख़ात़िर किये थे।''

फ़िरिश्ते ए'लान करेंगे। ''येह वोह शख़्स है जिस की सारी नेकियां उस के बाल बच्चे ले गए और येह उन की वजह से **जहन्नम** में दाख़िल हुवा।''

(قُرَّةُ العیون، الباب الثامن،فی عقوبةقاتل.....الخ، ص ٤٠١)

यक़ीनन वोह शख़्स बड़ा बद नसीब है जो अपने बाल बच्चों की सुन्नत के मुत़ाबिक़ तरबिय्यत नहीं करता, अपनी बीवी को ह़त्तल मक़्दूर **पर्दा** वग़ैरा के अह़काम नहीं सिखाता। बल्कि अज़ ख़ुद फ़ेशन के सामान मुहय्या करता, मेकअप करवा कर **बे पर्दा** स्कूटर पर बिठाता, शॉपिंग सेन्टरों की **ज़ीनत** बनाता और मख़्लूत़ तफ़रीह़ गाहों में फिरता फिराता है। याद रखिये जो लोग बा वुजूदे क़ुदरत अपनी औ़रतों और मह़ारिम को बे पर्दगी से मन्अ़ न करें वोह **दय्यूस** हैं, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है, ''ثَلَاثَةٌ لَا يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ اَبَدًا اَلدَّيُّوْثُ وَالرَّجُلَةُ مِنَ النِّسَاءِ وَمُدْمِنُ الْخَمْرِ'' (اَلتَّرْغِيْب وَالتَّرْهِيْب، ج٣، ص٧٦، حديث٨، دارالكتب العلميه بيروت) या'नी ''तीन शख़्स कभी जन्नत में दाख़िल न होंगे दय्यूस और मर्दानी वज़्अ़ बनाने वाली औ़रत और आ़दी शराबी।'' ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़लाउद्दीन **ह़स्कफ़ी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : ''دَيُّوْثٌ هُوَ مَن لَّا يَغَارُعَلٰى اِمْرَاَتِهٖ اَوْمَحْرَمِهٖ'' (اَلدُّرُّالْمُخْتَار، ج٦، ص١١٣، دارالمعرفة بيروت) या'नी ''दय्यूस'' वोह शख़्स होता है जो अपनी बीवी या किसी मह़रम पर ग़ैरत न खाए।'' मा'लूम हुवा कि बा वुजूदे क़ुदरत अपनी ज़ौजा, बहनों और जवान बेटियों वग़ैरा को गलियों, बाज़ारों, शॉपिंग सेन्टरों, मख़्लूत़ तफ़रीह़ गाहों में बे पर्दा घूमने फिरने,

अजनबी पड़ोसियों, ना महरम रिश्तेदारों, ग़ैर महरम मुलाज़िमों, चोकीदारों, ड्राइवरों से बे तकल्लुफ़ी और बे पर्दगी से मन्अ़ न करने वाले सख़्त अह़मक़, बे ह़या, **दय्यूस,** जन्नत से मह़रूम और जहन्नम के ह़क़दार हैं। अगर मर्द अपनी ह़ैसिय्यत के मुत़ाबिक़ मन्अ़ करता है और वोह नहीं मानतीं इस सूरत में इस पर न कोई इल्ज़ाम और न वोह दय्यूस।

सास बहू का अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता **इख़्तिलाफ़** हो जाए तो उस में इन्साफ़ का दामन हरगिज़ हाथ से न जाने देना, **मां** को हरगिज़ हरगिज़ मत झाड़ना इसी त़रह़ सिर्फ़ **मां** की फ़रियाद सुन कर बीवी को भी मत मारना, सिर्फ़ और सिर्फ़ **नरमी** से काम लेना कहीं ऐसा न हो कि बाज़ी हाथ से जाती रहे और रोने के दिन आएं। घर के जुम्ला अफ़राद को मेरा सलाम وَالسَّلَامُ مَعَ الْاِكْرَام

ग़मे मदीना व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत व बिला
हिसाब जन्नतुल
फ़िरदौस में सरकार के
पड़ोस का त़लब गार

शादी के मौक़अ़ पर अमीरे अहले सुन्नत مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی की त़रफ़ से इस्लामी बहनों को दिया जाने वाला मक्तूब

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم सगे मदीना **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी عُفِیَ عَنْهُ की जानिब से दरबारे मदीना की भिकारन, कनीज़े ग़ौसे ज़मन, ख़ादिमए शहन्शाहे ज़ुल मनन की ख़िदमत में मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا की मुस्कुराती हुई बहारों और मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَكْرِيْمًا के रंगीन रेगज़ारों और वहां के ख़ूब सूरत पहाड़ों की क़ित़ारों की ब-र-कतों से मालामाल महका महका ख़ुश गवार सलाम।

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُم وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ،

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْن عَلٰى كُلِّ حَال

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप को दोनों जहां में शादो आबाद रखे, आप की ख़ुशियों को त़वील करे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप को मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا के सदा बहार फूलों की त़रह़ हमेशा मुस्कुराती रखे। आप की बीमारियां, परेशानियां घरेलू ना चाक़ियां, तंग दस्तियां, क़र्ज़ दारियां दूर हों। इज़्दिवाजी ज़िन्दगी ख़ुश गवार गुज़रे। औलादे सालिह़ा से गोद हरी रहे, बार बार ह़ज का शरफ़ मिले और मीठा मदीना चूमना नसीब हो। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

आप की दुन्या व आख़िरत की बेहतरी के जज़्बे के तहत महज़ हुसूले सवाब की ख़ातिर अर्ज़ करता हूं कि अपने शोहर की ख़िदमत में कोताही मत करना, इस ज़िम्न में मीठे मीठे **आक़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के 6 ख़ुश्बूदार इर्शादात पेश करता हूं :

मदीना 1 : क़सम है उस की जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है अगर क़दम से सर तक शोहर के तमाम जिस्म में **ज़ख़्म** हों जिन से पीप और कच लहू बहता हो फिर औ़रत उसे चाटे तब भी ह़क़्क़े शोहर अदा न किया।

(مسندِ امام احمد، ج٤، ص٣١٨، حدیث١٢٦١٤)

मदीना 2 : ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में अ़र्ज़ की, कि दो औ़रतें दरवाज़े पर येह सुवाल करने के लिये खड़ी हैं कि अगर वोह अपने शोहर और अपने ज़ेरे कफ़ालत यतीमों पर स-दक़ा करें तो क्या उन की त़रफ़ से स-दक़ा अदा हो जाएगा ? तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "वोह औ़रतें कौन हैं ?" ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की : "अन्सार की एक औ़रत और ज़ैनब है।" तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "इन दोनों के लिये दुगना अज्र है, एक रिश्तेदारी का और दूसरा स-दक़े का।"

(صحیح مسلم، کتاب الزکاۃ، باب فضل النفقۃ...الخ، حدیث ١٠٠٠، ص ٥٠١ ملخصاً)

मदीना 3 : शोहर ने बीवी को बुलाया उस ने इन्कार कर दिया और उस (शोहर) ने ग़ुस्से में रात गुज़ारी तो फ़िरिश्ते सुब्ह़ तक उस औ़रत पर **ला'नत** भेजते रहते हैं । (صحیح البخاری، ج۲، ص۳۸۸، حدیث ۳۲۳۷) और दूसरी रिवायत में है, (शोहर) जब तक उस से राज़ी न हो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस औ़रत से **नाराज़** रहता है ।

(کنزالعمال، کتاب النکاح، قسم الاقوال، الحدیث ٤٤٩٩٨، ج١٦، ص١٦٠)

मदीना 4 : और (बीवी) बिग़ैर इजाज़त उस (शोहर) के घर से न जाए अगर ऐसा किया तो जब तक तौबा न करे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और फ़िरिश्ते उस पर ला'नत करते हैं । अ़र्ज़ की गई : अगर्चे शोहर ज़ालिम हो ? फ़रमाया : अगर्चे ज़ालिम हो । (مصنف ابن ابی شیبه، ج۳، ص۳۹۷، حدیث۳) बात बात पर **रूठ** कर मयके चली जाने वाली औ़रतों के लिये मुन्द-र-जए बाला ह़दीस में काफ़ी दर्स है ।

मदीना 5 : तीन क़िस्म के लोगों की नमाज़ को अल्लाह तआ़ला क़बूल नहीं फ़रमाता एक तो वोह औ़रत जो अपने शोहर की इजाज़त के बिग़ैर **घर से निकले**, दूसरा भागा हुवा ग़ुलाम और तीसरा वोह बादशाह जिस की रिआ़या उसे ना पसन्द करती हो । (کنزالعمال، ج١٦، ص٢٥، حدیث ٤٣٩١٩)

शायद किसी इस्लामी बहन को येह वस्वसा आए कि क्या सिर्फ़ औ़रतों पर ही मर्दों के हुक़ूक़ हैं ? मर्दों पर भी औ़रतों के कोई हुक़ूक़ हैं या नहीं ! तो पढ़िये :

मदीना 6 : कोई मोमिन किसी मोमिना बीवी को दुश्मन न जाने अगर उस की किसी आ़दत से **नाराज़** हो तो दूसरी ख़स्लत से **राज़ी** होगा।

(صحیح مسلم، ص ۷۷۵، حدیث ۱٤٦۹)

ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मौलाना मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان लिखते हैं : سُبْحٰنَ اللّٰه कैसी नफ़ीस ता'लीम ! मक़्सद येह है कि **बे ऐ़ब** बीवी मिलना ना मुम्किन है, लिहाज़ा अगर बीवी में दो एक **बुराइयां** भी हों तो उसे बरदाश्त करो कि कुछ **ख़ूबियां** भी पाओगे। यहां साह़िबे मिरक़ात ने फ़रमाया : जो बे ऐ़ब साथी की **तलाश** में रहेगा वोह दुन्या में **अकेला** ही रह जाएगा, हम ख़ुद हज़ारहा बुराइयों का सर चश्मा हैं, हर दोस्त अ़ज़ीज़ की बुराइयों से दर गुज़र करो, अच्छाइयों पर नज़र रखो, हां ! **इस्लाह़** की कोशिश करो, बे ऐ़ब तो रसूलुल्लाह (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) हैं।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 5, स. 88)

ज़ैल के पांच म-दनी फूल भी अपने दिल के म-दनी गुलदस्ते में सजा लीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **घर अम्न का गहवारा** बन जाएगा।

मदीना 7 : सास और नन्द से किसी सूरत भी न **बिगाड़िये।** उन की ख़ूब ख़िदमत करती रहिये। अगर वोह त़न्ज़ करें तो **ख़ामोश** रहिये।

मदीना 8 : सास बिलफ़र्ज़ **झिड़कियां** दे तो अपनी मां का तसव्वुर कर लीजिये कि वोह डांट रही हैं तो **सब्र** आसान हो जाएगा। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मदीना 9 : आप ने कभी सास के ग़ुस्सा हो जाने पर अगर जवाबी ग़ुस्से का मुज़ा-हरा किया तो फिर "**निभाव**" मुश्किल तरीन है।

मदीना 10 : सुसराल की "**बद सुलूकी**" की फ़रियाद अपने मयके में करना सामने चल कर **तबाही** का इस्तिक़्बाल करना है। लिहाज़ा सब्र के साथ साथ इस उसूल पर कारबन्द रहिये कि "**एक चुप सो (100) को हराए**" जवाब में सिर्फ़ दुआए ख़ैर कीजिये।

मदीना 11 : उ़मूमन आजकल सुसराल की त़रफ़ से बहू पर "जादू करती है", "अपने शोहर को क़ाबू कर लिया है" वग़ैरा वग़ैरा इल्ज़ाम लगाए जाते हैं, ख़ुदा न ख़्वास्ता आप के साथ ऐसा मुआ़-मला हो जाए तो आपे से बाहर हो जाने के बजाए **ह़िक्मते अ़-मली** और इन्तिहाई नरमी से काम लीजिये। अपना कमरा दिन के वक़्त बन्द न रखिये, घर के दूसरे अफ़राद की मौजू-दगी में अपने शोहर से "**कानाफूसी**" न कीजिये। शोहर की मौजू-दगी में भी चाय वग़ैरा अपनी सास या नन्द के साथ बैठ कर ही पियें। उन के सामने हरगिज़ मुंह न बिगाड़िये, ग़ुस्सा निकालने के लिये बरतन ज़ोर से न

पछाड़िये । बच्चों को इस त़रह़ मत डांटिये कि उन को वस्वसा आए कि हमें सुनाती और कोसती है। धोने पकाने के काम में फुरती दिखाइये मत़लब येह कि नजासत को नजासत से (या'नी इल्ज़ाम को हंगामे से) पाक करने के बजाए (ह़िक्मत व ह़ुस्ने अख़्लाक़ के) पानी से ही पाक किया जा सकता है। इस त़रह़ आप اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ अपने सुसराल की **मन्ज़ूरे नज़र** हो जाएंगी और ज़िन्दगी भी ख़ुश गवार हो जाएगी, सुसराल के ह़क़ में दुआ से ग़फ़्लत न कीजिये कि दुआ से बड़े बड़े मसाइल ह़ल हो जाते हैं । **सौमो सलात** की पाबन्दी करती रहिये, **शर-ई पर्दे** का एहतिमाम कीजिये । याद रहे ! देवर व जेठ से भी पर्दा है । अपने घर में "**फ़ैज़ाने सुन्नत**" का दर्स जारी कीजिये । ख़ामोशी की आ़दत डालिये कि ज़ियादा बोलने से **झगड़े** का अन्देशा बढ़ जाता है । फ़ेशन परस्ती के बजाए **सुन्नतों** का रास्ता इख़्तियार कीजिये कि इसी में भलाई है । मुझ गुनहगार को दुआए ग़मे मदीना व बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत से नवाज़ती रहें । अगर आप को मेरा येह मक्तूब पसन्द आए तो इसे प्लास्टिक कोटिंग करवा लीजिये और ख़ुदा न ख़्वास्ता कभी घरेलू झगड़ा हो तो इस को पढ़ लीजिये । وَالسَّلَامُ مَعَ الْاِکْرَام

शादी के मौक़अ़ पर अमीरे अहले सुन्नत مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی की त़रफ़ से घर के सर परस्त को दिया जाने वाला मक्तूब

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का बन्दए आ़जिज़ो लाचार और मीठे मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ग़ुलामे गुनहगार, उम्मते नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की भलाई का त़लब गार, जिन के यहां शादी हो रही है उन के दुख़ूले जन्नत का ख़्वास्त गार, सगे मदीनए पुर अन्वार मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र-ज़वी عُفِیَ عَنْهُ की जानिब से शादी की मुसर्रतों और शादमानियों से लबरेज़, घराने के सर परस्त और तमाम अहले ख़ाना व ख़ानदान की ख़िदमात में गुम्बदे ख़ज़रा को चूमता हुवा झूमता हुवा ख़ुश गवार व पुर बहार सलाम और ढेरों मुबारक बाद

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُم وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْن عَلٰى كُلِّ حَال

या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ शादी ख़ाना आबादी फ़रमा, **या अल्लाह !** عَزَّوَجَلَّ मदीनए मुनव्वरह के सदा बहार फूलों की त़रह़ दूल्हा दुल्हन और दोनों ख़ानदानों को दोनों जहानों में मुस्कुराता रख, इन सब की, तमाम उम्मत की और मुझ पापी व बदकार की मग़्फ़िरत फ़रमा । اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

अफ़्सोस ! सद अफ़्सोस ! आजकल शादी जैसी मीठी मीठी सुन्नत مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ बहुत सारे गुनाहों में घिर चुकी है । म-सलन

मंगनी में लड़का अपने हाथ से मंगेतर को अंगूठी पहनाता है ह़ालां कि येह ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है । शादी में दूल्हा अपने हाथ मेहंदी से रंगता है, येह भी ह़राम है, मर्दों और औ़रतों की मख़्लूत़ दा'वतों का सिल्सिला होता है या कहीं कहीं आरपार नज़र आने वाला बराए नाम पर्दा बीच में डाल दिया जाता है, इस पर मज़ीद तुर्रा येह कि औ़रतों में ग़ैर मर्द घुस कर खाना बांटते और ख़ूब विडियो फ़िल्में बनाते हैं ।

तौबा ! तौबा ! आजकल शादियों में ख़ानदान की जवान लड़कियां ख़ूब नाचती गाती हैं । इस दौरान मर्द भी बिला तकल्लुफ़ अन्दर आते जाते हैं मर्द और औ़रतें जी भर कर बद निगाही करते हैं न ख़ौफ़े ख़ुदा न शर्मे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم । फ़िल्में डिरामे, नाच गाने, ढोलकी और डंडिया रास के फंक्शन्ज़ देखने वाले येह बात याद रखें कि येह **ह़राम** काम हैं इन का अ़ज़ाब बरदाश्त नहीं हो सकेगा । चुनान्चे हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कुछ ऐसे लोग देखे जिन की आंखें और कान कीलों से ठुके हुए थे । दरयाफ़्त करने पर बताया गया कि येह वोह लोग हैं जो वोह देखते हैं जो इन्हें नहीं देखना चाहिये और वोह सुनते हैं जो इन्हें नहीं सुनना चाहिये ।

(المعجم الكبير، الحديث ٧٦٦٦، ج٨، ص١٥٦)

शहन्शाहे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो गाने वाली के पास बैठे, कान लगा कर ध्यान से उस से सुने तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत उस के कानों में सीसा उंडेलेगा।

(کنزالعمال، کتاب اللھو واللعب.....الخ، الحدیث ٤٠٦٦٢، ج١٥، ص٩٦)

फ़िल्म देखे और जो गाने सुने कील उस की आंख कानों में ठुके

अफ़्सोस ! फ़िल्मी गानों की धूमों और मूसीक़ी की धुनों और रेकॉर्डिंग के बिग़ैर आजकल शायद ही कहीं शादी होती हो। अगर कोई समझाए तो बा'ज़ अवक़ात जवाब मिलता है, वाह साहिब ! **अल्लाह** ने पहली बार ख़ुशी दिखाई और "गाना बाजा" न करें। बस जी ख़ुशी के वक़्त सब कुछ चलता है ! (مَعَاذَاللّٰه) मुसल्मानो ! ख़ुशी के वक़्त अल्लाह का शुक्र अदा किया जाता है कि ख़ुशियां त़वील हों। ना फ़रमानी नहीं की जाती **अल्लाह** न करे कि इस ना फ़रमानी की नुहूसत से इक्लौती बेटी **दुल्हन** बनने के आठवें दिन रूठ कर मयके आ बैठे और मज़ीद आठ दिन के बा'द **तीन त़लाक़** का परचा आ पहुंचे और सारी ख़ुशियां धूल में मिल जाएं। या धूमधाम से नाच गानों की धमा चौकड़ी में बियाही हुई दुल्हन 9 माह के बा'द पहली ही ज़चगी में मौत के घाट उतर जाए। या ख़ुदा न ख़्वास्ता **दूल्हा** शादी से पहले या चन्द ही रोज़ के बा'द दुन्या से चल बसे क्यूं कि मौत कह कर नहीं आती। एक दर्दनाक वाक़िआ़ पेशे ख़िदमत है।

ह़िकायत : एक शख़्स जिस का घर क़ब्रिस्तान के क़रीब था उस ने अपने बेटे की शादी के सिल्सिले में रात नाचरंग की महफ़िल क़ाइम की लोग नाचकूद और धमा चौकड़ी में मश्ग़ूल थे कि क़ब्रिस्तान का सन्नाटा चीरती हुई दो अ़-रबी अश्आ़र पर मुश्तमिल एक गरज-दार आवाज़ गूंज उठी या'नी, "ऐ नाचरंग की ना पाएदार लज़्ज़तों में मुन्हमिक होने वालो ! **मौत** तमाम खेलकूद को ख़त्म कर देती है । बहुत से ऐसे लोग हम ने देखे जो मुसर्रतों और लज़्ज़तों में ग़ाफ़िल थे मौत ने उन्हें अपने अहलो इ़याल से जुदा कर दिया ! "रावी कहते हैं, ख़ुदा की क़सम ! चन्द दिनों के बा'द **दूल्हा** का इन्तिक़ाल हो गया । आह ! (ابن ابی دنیا، کتاب الاعتبار واعقاب السرور الاحزان، الرقم ٤١، ج٦، ص ٣١) मौत की आंधी आई और ठठ्ठा मस्ख़रियों, धमा चौकड़ियों, संगीत की धुनों, चुटकुलों और क़ह्क़हों शादमानियों और मुसर्रतों, मचलते अरमानों और ख़ुशी की तमाम राह़त सामानियों को उड़ा कर ले गई । **दूल्हा मियां** मौत के घाट उतर गए और ख़ुशियों भरा घर देखते ही देखते मातम कदा बन गया ।

तुम ख़ुशी के फूल लोगे कब तलक तुम यहां ज़िन्दा रहोगे कब तलक

इस ह़िकायत को सुन कर शादियों में बेहूदा फंक्शन बरपा करने वालों और इन में शरीक हो कर गाने बाजे की धुनों पर हंस हंस कर ख़ुशी के ना'रे बुलन्द करने वालों की आंखें खुल जानी चाहिएं ।

याद रखिये ! ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا से मन्क़ूल है, **''जो हंस हंस कर गुनाह करेगा वोह रोता हुवा जहन्नम में दाख़िल होगा ।''**

(مکاشفة القلوب، الباب السادس والثمانون فی الضحك والبكاء والباس، ص ۲۷۵)

ग़ौर कीजिये ! कौन सा ''जोड़ा'' आज सुखी है ? कमो बेश हर जगह ख़ाना जंगी है, कहीं सास बहू में मोरचा बन्दी है तो कहीं नन्द और भावज में ठीकठाक ठनी है । बात बात पर ''रूठ मन'' का सिल्सिला है। एक दूसरे पर जादू टोने करवाने के इल्ज़ामात हैं, येह सब कहीं शादियों में ग़ैर शर-ई ह़रकात का नतीजा तो नहीं ? क्यूंकि आजकल जिस के यहां **शादी** का सिल्सिला होता है वहां इतने गुनाह किये जातें हैं कि उन का शुमार नहीं हो सकता ।

हाथ जोड़ कर मेरी म-दनी इल्तिजा है कि घर के जुम्ला अफ़्राद दो रक्अ़त **नमाज़े तौबा** अदा करें और गिड़गिड़ा कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा करें और आयन्दा गुनाहों से बचने का अ़ह्द करें ।

"शादी मुबारक" के 9 हुरूफ़ की निस्बत से नव म-दनी फूल

﴾1﴿ बहू को चाहिये कि अपनी मां बहनों ही की त़रह़ अपनी सास और

नन्द से भी महब्बत करे ﴾2﴿ बहू की मौजू-दगी में मां और बेटी का आपस में कानाफूसी करना बहू के लिये वस्वसों का बाइस और उस के दिल में एहसासे महरूमी पैदा करने वाला है और इस त़रह़ इस के दिल में नफ़्रतों की बुन्याद पड़ती है ﴾3﴿ बहू को जब तक बेटी से बढ़ कर सास का प्यार नहीं मिलेगा उस वक़्त तक उस का अपनी सास, नन्दों से मानूस होना बहुत मुश्किल है ﴾4﴿ सास कभी डांट दे तो बहू को चाहिये कि अपनी मां की डांट समझ कर बरदाश्त कर ले ﴾5﴿ अगर कभी बहू **बद तमीज़ी** कर बैठे तो सास को चाहिये कि बेटी समझ कर मुआ़फ़ कर दे ﴾6﴿ भूल कर भी येह अल्फ़ाज़ किसी के मुंह से न निकलें कि "बहू ता'वीज़ करवाती है" वरना फ़साद बरपा और सुकून बरबाद हो सकता है ﴾7﴿ अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता कभी घर से ता'वीज़ मिल भी जाए तब भी बिग़ैर शर-ई सुबूत के येह त़ै कर लेना कि बहू ने डाला, जाइज़ नहीं ﴾8﴿ यक़ीन जानिये शैत़ान भी ता'वीज़ ऐसी जगह डाल सकता है कि घर के किसी फ़र्द के हाथ लग जाए और घर में फ़साद खड़ा हो ﴾9﴿ भाभी का देवर व जेठ से पर्दा न करना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। सास और सुसर वग़ैरा बा वुजूदे क़ुदरत नहीं रोकेंगे तो ख़ुद भी गुनहगार होंगे।

"अल्लाह" के चार हुरूफ़ की निस्बत से चार म-दनी इल्तिजाएं

﴾1﴿ तमाम अहले ख़ाना को येह मक्तूब पढ़ कर सुना दिया जाए। दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार इज्तिमाअ़ में पाबन्दी से शिर्कत की म-दनी इल्तिजा है ﴾2﴿ घर के तमाम अफ़राद नमाज़ रोज़े की पाबन्दी करते रहें और म-दनी इन्आ़मात का हर माह रिसाला पुर कर के जम्अ़ करवाएं। मक-त-बतुल मदीना के जारी कर्दा सुन्नतों भरे बयान का कम अज़ कम एक केसिट हो सके तो रोज़ाना ज़रूर सुनिये ﴾3﴿ मुनासिब ख़याल फ़रमाएं तो येह मक्तूब संभाल कर रख लीजिये और ख़ुदा न ख़्वास्ता घर में कभी ना इत्तिफ़ाक़ी हो जाए तो कम अज़ कम आख़िरी 9 म-दनी फूल पढ़ लीजिये ﴾4﴿ घर का हर मर्द जिस की उ़म्र 20 बरस से ज़ाइद हो वोह हर माह दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबिय्यत के तीन रोज़ा म-दनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र किया करे। وَالسَّلَامُ مَعَ الْاِكْرَام

म-दनी सेहरा (इस्लामी भाइयों के लिये)

(अज़ शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी (دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه)

(**ऐ** फूलों से सजी हुई कार में सुवार हो कर जग-मगाते हुज्रए उ़रूसी की त़रफ़ ख़ुशी ख़ुशी जाने वाले आ़रिज़ी दूल्हा! याद रख! अ़न्क़रीब

तुझे फूलों से लदे हुए जनाज़े में सुवार हो कर कीड़े मकोड़ों से उभरती हुई घुप अंधेरी क़ब्र में जा पड़ना है। अ़त्तारे गुनहगार के नज़्दीक ह़क़ीक़ी शादी (ख़ुशी) क़ब्र में ईमान सलामत ले जाना है। आह ! काश बक़ीअ़)

फ़ज़्ले मौला से ग़ुलाम अह़मद रज़ा दूल्हा बना
ख़ुशनुमा ख़ुशरंग फूलों का है सर सेहरा सजा

इन की "शादी ख़ाना आबादी" हो रब्बे मुस्त़फ़ा
अज़ पए ग़ौसुल वरा बहरे इमाम अह़मद रज़ा

इन की ज़ौजा या ख़ुदा करती रहे पर्दा सदा
इन की बीवी को इलाही बख़्श तौफ़ीक़े ह़या

तू सदा रखना सलामत इन का जोड़ा या ख़ुदा
घर के झगड़ों से बचाना तू इन्हें रब्बुल उ़ला

इन को ख़ुशियां दो जहां में तू अ़ता कर किब्रिया
इन पे रन्जो ग़म की ना छाए कभी काली घटा

आफ़ते फ़ेशन से हर दम इन को तू मौला बचा
या इलाही ! इन का घर गह्वारए सुन्नत बना

इन को उम्मत में इज़ाफ़े का सबब मौला बना
नेक और परहेज़ गार औलाद कर दे तू अ़ता

सादगी से इस त़रह़ घर इन का महके या ख़ुदा
फूल जैसा कि महकते हैं मदीने के सदा

येह ग़ुलाम अह़मद रज़ा जब तक यहां ज़िन्दा रहे
ख़ूब ख़िदमत सुन्नतों की येह सदा करता रहे

या इलाही दे सआ़दत इन को ह़ज की बार बार
बार बार इन को दिखा मीठे मुह़म्मद का दियार

हो बक़ीए पाक में दोनों को मदफ़न भी अ़ता
सब्ज़ गुम्बद का तुझे देता हूं मौला वासिता

येह मियां बीवी रहें जन्नत में यक्जा ऐ ख़ुदा
या इलाही ! है येही अ़त्तार के दिल की दुआ

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

म-दनी सेहरा (इस्लामी बहनों के लिये)

(**अज़ :** शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه)

तुझ को हो शादी मुबारक अब है तेरी रुख़्सती — रुख़्सती में तेरी पिन्हां रुख़्सती है क़ब्र की[1]
घर तेरा हो मुश्कबार और ज़िन्दगी भी पुर बहार — रब हो राज़ी ख़ुश हों तुझ से दो जहां के ताजदार
मेरी बेटी का ख़ुदाया घर सदा आबाद रख — फ़ातिमा ज़हरा का सदक़ा दो जहां में शाद रख
येह मियां बीवी इलाही मक्रे शैत़ां से बचें — येह नमाज़ें भी पढ़ें और सुन्नतों पर भी चलें
येह मियां बीवी चलें ह़ज को इलाही बार बार — बार बार इन को दिखा मीठा मदीना किर्दगार
मयका व सुसराल तेरे दोनों ही ख़ुशह़ाल हों — दो जहां की ने'मतों से ख़ूब मालामाल हों
अपने शोहर की इत़ाअ़त से न ग़फ़्लत करना तू — ह़श्र में पछताएगी ऐ प्यारी बेटी वरना तू
मेरी बेटी ! या इलाही ! ना बने ग़ुस्से की तेज़ — येह करे सुसराल में हर दम लड़ाई से गुरेज़
याद रख ! तू आज से बस तेरा घर सुसराल है — नफ़रते सुसराल सुन ले आफ़तों का जाल है
मां समझ कर सास को, ख़िदमत जो करती है बहू — राज सारे घर पे सुन ले तू वोह करती है बहू
सास और नन्दों की ख़िदमत कर के हो जा कामयाब — इन की ग़ीबत कर के मत कर बैठना ख़ाना ख़राब
सास और नन्दें अगर सख़्ती करें तो सब्र कर — सब्र कर बस सब्र कर चलता रहेगा तेरा घर

---

1 : याद रख जिस त़रह़ आज तुझे दुल्हन बना कर फूलों से लाद कर हुज्रए उ़रूसी में ले जाया जा रहा है इसी त़रह़ जल्द ही तेरे जनाज़े को फूलों से लाद कर अंधेरी क़ब्र की त़रफ़ ले जाया जाएगा ।

तू ख़ुशी के फूल लेगी कब तलक *तू यहां ज़िन्दा रहेगी कब तलक !*

इस त़रह़ बरबाद हो सकता है बेटी तेरा घर[1]
सास और नन्दों का शिक्वा अपने मयके में न कर

अब तू इस घर को समझ अपना ही घर हर ह़ाल में
मयके के मत कर फ़ज़ाइल तू बयां सुसराल में[2]

है कहां भूल एक की, दो हाथ से ताली बजी
सास चीख़ी तू भी बिफरी और लड़ाई ठन गई

फंस के रह जाएगी बेटी ! क़ज़ियों के जन्जाल में
याद रख तू ने अगर खोली ज़बां सुसराल में

इल्तिजा है रोज़ देना दर्स अपने घर पे तू
मेरी प्यारी बेटी सुन फ़ैज़ाने सुन्नत पढ़ के तू

إِنْ شَاءَ الله अपने घर में तू सुखी होगी सदा
गर नसीह़त पर अ़मल अ़त्तार की होगा तेरा

घर अम्न का गहवारा कैसे बने ?

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **6 ज़ुल क़ा'दातिल** ह़राम 1428 सि.हि. 17 दिसम्बर 2007 सि.ई. बरोज़ पीर शरीफ़ एक इस्लामी भाई और उन के बच्चों की अम्मी को **घरेलू नाचाक़ी के इलाज** के लिये नसीह़त के म-दनी फूल इनायत फ़रमाए (जिन में

1.**अगर** ख़ुदा न ख़्वास्ता सुसराल में कोई चप-क़लिश हो जाए तौ मयके में इस की भड़ास निकालने में येह ख़त़रा है कि मां, बहनें हमदर्दी करें और उन की शह मिलने पर जज़्बात मज़ीद मुश्तइल हों और यूं लड़ाई ठन्डी होने के बदले मज़ीद बढ़ जाए और नतीजतन घर बरबाद हो जाए, आजकल इस त़रह़ से घर तबाह हो रहे हैं इसी लिये सगे मदीना ने येह नसीह़त करने की जसारत की है । (कोई सुने या न सुने रोज़ाना फ़ैज़ाने सुन्नत का दर्स जारी रखने की म-दनी इल्तिजा है ।) 2. **: अपने** मां, बाप या भाई बहनों की सख़ावतों के उ़मूमन चर्चे बहू अपने सुसराल में करती है जिस से सुसराल वालों को शैत़ान वस्वसा डालता है कि येह तुम लोगों को सुनाती और जताती है कि तुम लोग तो कन्जूस और बे मुरुव्वत हो । और यूं नफ़रतों की बुन्यादें मज़बूत़ होती हैं । बहू का मुंह फुलाए रहना भी फ़साद की सूरत बनता है । इस त़रह़ सुसराल के सामने अपने बच्चों को कोसने से भी गुरेज़ करें, कि बा'ज़ अवक़ात सुसराल वाले समझते हैं येह हमें सुना रही है, फिर जंग छिड़ जाती है ।

ज़रूरतन कहीं कहीं तरमीम की गई है) इन म-दनी फूलों पर अ़मल कर के اِنْ شَآءَاللّٰه घर को ह़क़ीक़ी मा'नों में **अम्न का गहवारा** बनाया जा सकता है।

"मिज़ाज शनासी की आ़दत डालो" के उन्नीस हुरूफ़ की निस्बत से शादीशुदा इस्लामी भाइयों के लिये 19 म-दनी फूल

मदीना 1 : इस में कोई शक नहीं कि शोहर अपनी ज़ौजा पर **ह़ाकिम** है ताहम **इन्साफ़** से काम लेना ज़रूरी है कि ह़ाकिम से मुराद सियाह सफ़ेद का मालिक होना नहीं है।

मदीना 2 : औ़रत टेढ़ी पस्ली की **पैदावार** है, उस की नफ़्सिय्यात को परख कर उस के साथ **बरताव** कीजिये। अगर अपनी सोच के **मे'यार** पर उस को तोलेंगे तो घर चलना बहुत **दुश्वार** है।

मदीना 3 : औ़रत उ़मूमन **नाक़िसुल अ़क़्ल** होती है, 100 फ़ीसद आप के मे'यार पर पूरी उतरे येह **तवक़्क़ोअ़** उस से बेकार है, लिहाज़ा उस की कोताहियों को नज़र अन्दाज़ कर के उस पर मज़ीद **एह़सानात** कीजिये।

मदीना 4 : लाख ग़-लतियां करे, मुंह **चढ़ाए, बुड़बुड़ाए**, अगर आप घर **आबाद** देखना चाहते हैं तो उस के साथ उस वक़्त तक **नरमी** से पेश आने का ज़ेह्न बनाते रहिये जब तक शरीअ़त सख़्ती की **इजाज़त** न दे।

मदीना 5 : अगर औ़रत टेढ़ी चलती रही और आप **सब्र** करते रहे तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **अज्रो सवाब** का आख़िरत में अम्बार देखेंगे । नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रूह़ परवर है : ''**कामिल ईमान** वालों में से वोह भी है जो **उ़म्दा अख़्लाक़** वाला और अपनी ज़ौजा के साथ सब से ज़ियादा नर्म त़बीअ़त वाला है ।

(جامع الترمذی، ج۲، ص۳۸۷، حدیث ۱۱۶۵)

मदीना 6 : अगर बीवी आप के **मन पसन्द** खाने नहीं पका पाती तो **सब्र** कीजिये । मह्ज़ नफ़्स की मा'मूली **लज़्ज़त** की ख़ात़िर बिला इजाज़ते शर-ई उस को डांट डपट करना, मारधाड़ पर उतर आना **बरबादिये आख़िरत** का बाइ़स है बन सकता ।

मदीना 7 : जिस त़रह़ आ़म मुसल्मानों की दिल आज़ारी **ह़राम** है उसी त़रह़ बिला मस्लह़ते शर-ई बीवी की दिल आज़ारी में भी जहन्नम की **ह़क़दारी** है ।

मदीना 8 : अगर कभी ग़ुस्सा आ जाए और ज़ौजा पर **नाह़क़** ज़बान चल जाए या बिला मस्लह़ते शर-ई हाथ उठ जाए तो **तौबा** भी वाजिब और **तलाफ़ी** भी लाज़िम । बिग़ैर शरमाए और बिग़ैर अपनी कस्रे शान समझे उस से निहायत लजाजत व नदामत के साथ इस त़रह़ **मा'ज़िरत**

कीजिये कि उस का दिल साफ़ हो जाए और वोह वाक़िअ़तन **मुआ़फ़** कर दे। हर जगह **रस्मी SORRY** बोल देना काम नहीं देता न इस त़रह़ ह़क़्क़ुल अ़ब्द से यक़ीनी **ख़लासी** होती है। **जैसा जुर्म वैसी मुआ़फ़ी तलाफ़ी ।**

मदीना 9 : कभी आप की पुकार पर **जवाब** न मिले तो बे तह़ाशा बरस पड़ना **सिफ़्ला पन** है, हुस्ने ज़न से काम लीजिये कि बेचारी ने **सुना** न होगा या कोई और **मजबूरी** मानेअ़ हुई होगी।

मदीना 10 : कभी कपड़े की इस्त्री बराबर न हुई, खाने में नमक मिर्च **कमोबेश** हुवा, **ताज़ा** खाना पका कर न दिया, दूसरे दिन का गर्म कर के **ठन्डा** ही रख दिया, बरतन बराबर न **धुल** पाए तो जारिह़ाना अन्दाज़ से **हुक्म** चलाने और **डांट** पिलाने के बजाए **नरमी** से **तफ़्हीम** (या'नी समझाना), **इज़्दियादे ह़ुब** (या'नी मह़ब्बत में इज़ाफ़े) का बाइ़स होगी। नफ़्सो शैत़ान की **चालों** को समझने की कोशिश कीजिये, नफ़रतें मत बढ़ाइये।

मदीना 11 : ज़बान से बताने में **ग़ुस्सा** आ जाता हो और बात **बिगड़** जाती हो तो अगर फ़रीक़ैन ऐसे मौक़अ़ पर एक दूसरे को **तह़रीरी** त़ौर पर समझाने का मा'मूल बनाएं तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **झगड़े** की नौबत नहीं आएगी।

मदीना 12 : होटल या बाज़ार की ग़िज़ा की मानिन्द **लज़ीज़ अ़ग़िज़या**

(या'नी ग़िज़ाएं) बनाने का ज़ौजा से बिल जब्र **मुत़ा-लबा** करना नफ़्स की **पैरवी** और उस के न बनाने पर त़न्ज़ो मिज़ाह़, त़ा'नो तश्नीअ़ और ज़बर दस्ती की **दिल आज़ारी** करना शैत़ान की ख़ुशी का **सामान** है।

मदीना 13 : अपनी वालिदा वग़ैरा की **शिकायत** पर बिग़ैर शर-ई सुबूत के ज़ौजा को **झाड़ना** या मारना वग़ैरा **ज़ुल्म** है और **ज़ालिम जहन्नम का ह़क़दार।** ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : **''ज़ुल्म जहन्नम में ले जाने वाला है।''** (جامع الترمذی، ج۳، ص٤٠٦، حدیث ٢٠١٦ ملخصاً)

मदीना 14 : अपना काम अपने हाथ से करना बाइ़से सआ़दत और **अ़ज़ीम सुन्नत** है। उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं कि सुल्त़ाने मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने कपड़े ख़ुद सी लेते और अपने ना'लैने मुबा-रकैन गांठते और वोह सारे काम करते जो मर्द अपने घरों में करते हैं।'' (کنزالعمال، ج۷، ص٦٠، حدیث١٨٥١٤)

मदीना 15 : छोटी छोटी बातों पर बीवी को **हुक्म** देना म-सलन येह उठा दो, वोह रख दो, फुंला चीज़ ढूंड कर ला दो वग़ैरा से **बचना** और अपना काम अपने हाथ से कर लिया करना **घर को अम्न का गहवारा** बनाने में मदद देता है।

मदीना 16 : अपने छोटे छोटे कामों के लिये बीवी को नींद से **जगा**

देना, कामकाज और झाड़ू पोचे के दौरान, आटा गूंधते हुए, नीज़ दर्दे सर, नज़्ला या दीगर बीमारियों के होते हुए उन को **काम** के ऑर्डर दिये जाना घर के माह़ोल को ख़राब कर सकता है। जिस त़रह़ आप को **नींद** प्यारी है, सुस्ती होती है, मूड ऑफ़ होता है इसी त़रह़ के **अ़वारिज़** औ़रत को भी दरपेश होते हैं बल्कि मर्द के मुक़ाबले में औ़रत को नींद ज़ियादा आती है नीज़ उस को भी गु़स्सा आ सकता है लिहाज़ा **मिज़ाज शनासी** की आ़दत डालिये।

मदीना 17 : फ़रीक़ैन में से अगर एक को **गु़स्सा** आ जाए तो दूसरे का **ख़ामोश** रहना बहुत ज़रूरी है कि गु़स्से का गु़स्से से इज़ाला बसा अवक़ात **ख़त़रनाक** साबित होता है।

मदीना 18 : बावर्ची ख़ाने में मस्रूफ़िय्यत के दौरान बीवी को इस त़रह़ **तन्क़ीद** का निशाना बनाना कि **आलू** तराश्ना नहीं आता, **टमाटर** काटने का ढंग नहीं, **अदरक** क्या इस त़रह़ काटते हैं ? वग़ैरा वग़ैरा बहुत ही **तक्लीफ़ देह** और बाइ़से तन्फ़ीर होता है। अ़क़्ल मन्द वोही है जो बीवी की जाइज़ त़ौर पर **ह़ौसला अफ़्ज़ाई** करता रहे और अपना काम निकालता रहे।

मदीना 19 : मियां बीवी का बच्चों के सामने **लड़ना** झगड़ना उन के अख़्लाक़ के लिये भी **तबाह कुन** है।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

"शोहर ह़ाकिम होता है" के चौदह हुरूफ़ की निस्बत से शादीशुदा इस्लामी बहनों के लिये 14 म-दनी फूल

मदीना 1 : मियां ह़ाकिम होता और **बीवी** महकूम होती है इस के उलट होने का **ख़याल** भी दिल में न लाइये ।

मदीना 2 : जब मियां **ह़ाकिम** है तो उस की इत़ाअ़त को **लाज़िम** समझिये । **सय्यिदुल मुर-सलीन, ख़ा-तमुन्नबिय्यीन, जनाबे रहमतुल्लिल आ-लमीन** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "औरत जब पांच **नमाज़ें** पढ़े, र-मज़ान के **रोज़े** रखे, अपनी इ़ज़्ज़त की **ह़िफ़ाज़त** करे और अपने ख़ावन्द की **इत़ाअ़त** करे तो जिस दरवाज़े से चाहे **जन्नत** में दाख़िल हो ।" (المعجم الاوسط، ج۳، ص۲۸۳، حدیث٤٥٩٨)

मदीना 3 : उन का शरीअ़त के मुत़ाबिक़ मिलने वाला हर **हुक्म** ख़्वाह नफ़्स पर कितना ही गिरां हो **ख़ुशदिली** के साथ सर आंखों पर लीजिये ।

मदीना 4 : उन की पसन्द के **खाने** उन की मरज़ी के मुत़ाबिक़ उ़म्दा त़रीक़े पर **पका** कर, बश्शाशत के साथ पेश कर के उन के दिल में **ख़ुशी** दाख़िल कर के बे अन्दाज़ा सवाब की ह़क़दार बनिये । **ह़ज़रते** सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक

फ़राइज़ की अदाएगी के बा'द सब से अफ़्ज़ल अ़मल मुसल्मान के दिल में ख़ुशी दाख़िल करना है।" (المعجم الکبیر، ج۱۱، ص۵۹، حدیث۱۱۰۷۹)

मदीना 5 : उन की हर वोह तन्क़ीद जो शरअ़न **दुरुस्त** हो अगर इस पर **बुरा** लगे तो उसे शैत़ान का वार समझ कर **लाहौल** शरीफ़ पढ़ कर शैत़ान को **ना मुराद** लौटाइये।

मदीना 6 : अगर किसी ख़त़ा बल्कि ग़लत़ फ़हमी की बिना पर भी मियां **डांट डपट** करे या बिलफ़र्ज़ **मारे** तो हंसी ख़ुशी **सह** लीजिये कि इस में आप की आख़िरत के साथ साथ दुन्या में भी **भलाई** है और اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **घर अम्न का गहवारा** रहेगा।

मदीना 7 : अगर सामने **ज़बान** चलाई, **मुंह** फुलाया, **बरतन** पछाड़े, मियां का ग़ुस्सा बच्चों पर **उतारा** और इसी त़रह़ की दीगर **ना मुनासिब ह़-र-कतें** कीं तो इस से ह़ालात **संवरने** के बजाए मज़ीद **बिगड़ेंगे**, येह अच्छी त़रह़ गिरेह में बांध लीजिये कि इस त़रह़ करने से अगर ब ज़ाहिर **सुल्ह़** हो भी गई तब भी दिलों में से **नफ़रतें** ख़त्म होने का इम्कान न होने के बराबर है।

मदीना 8 : मियां की ख़ामियों के बजाए ख़ूबियों ही पर **नज़र** रखिये और उन के ह़क़ में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से **डरती** रहिये।

ऐबों को ऐब जू की नज़र ढूंडती है पर

जो ख़ुश नज़र है ख़ूबियां आएं उसे नज़र

मदीना 9 : मियां या सुसराल की **शिकायत** मयके में करना दुन्या व आख़िरत के लिये सख़्त **नुक़्सान** देह साबित हो सकता है कि फ़ी ज़माना मुशा-हदा येही है कि इस त़रह़ ग़ीबतों, तोह्मतों, चुग़्लियों, ऐ़ब दरियों और दिल आज़ारियों वग़ैरा त़रह़ त़रह़ के **गुनाहों** का बहुत बड़ा **दरवाज़ा** खुल जाता है फिर उस की नुहूसत से बारहा दुन्या में येह **आफ़त** आती है कि घर **टूट** जाता है।

मदीना 10 : हां अगर वाक़ेई शोहर **ज़ुल्म** करता है या सुसराल वाले **सताते** हैं तो सिर्फ़ ऐसे शख़्स को अच्छी **निय्यत** के साथ **फ़रियाद** की जाए जो ज़ुल्म से बचा सकता, सुल्ह़ करवा सकता हो या **इन्साफ़** दिलवा सकता हो, बाक़ी सिर्फ़ भड़ास निकालना, दिल हलका करने के लिये "घर की बातें" मयके या सहेलियों के पास करना ग़ीबतों और तोह्मतों वग़ैरा के **गुनाहों** में डाल कर सुनने सुनाने वालों को **जहन्नम** का ह़क़्दार बना सकता है।

मदीना 11 : बिलफ़र्ज़ शोहर या सास वग़ैरा की किसी ह़-र-कत से कभी दिल को **ठेस** पहुंचे तो ख़ुद को **क़ाबू** में रखिये, येह आप के **इम्तिह़ान** का मौक़अ़ है कि या तो ज़बान व दिल को क़ाबू में रख कर **सब्र** कर के जन्नत की ला ज़वाल ने'मतों को पाने की सअ़्य कीजिये या ज़बान की **आफ़तों** में पड़ कर शरीअ़त का दाएरा **तोड़** कर अपने आप को **जहन्नम** की ह़क़्दार ठहराइये।

मदीना 12 : अगर्चे आप कितनी ही **मस्रूफ़** हों, ख़्वाह **नींद** के मज़े लूट रही हों, जूं ही शोहर आवाज़ दे, **सवाबे** अ़ज़ीम पाने की निय्यत से फ़ौरन **लब्बैक** (या'नी मैं ह़ाज़िर हूं) कहती हुई उठ बैठिये और उन की **ख़िदमत** में मश्ग़ूल हो कर **जन्नतुल फ़िरदौस के ख़ज़ाने** समेटना शुरूअ़ कर दीजिये ।

मदीना 13 : शोहर की दिलजूई की ख़ातिर उन के वालिदैन वग़ैरा की **ख़ुशदिली** के साथ **ख़िदमत** बजा लाइये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दोनों जहां में बेड़ा पार होगा ।**

कर भला हो भला

मदीना 14 : शोहर की हरगिज़ **ना शुक्री** मत किया कीजिये कि उस के आप पर बे शुमार **एह़सानात** हैं । **सरकारे नामदार**, मदीने के ताजदार, बि इज़्ने परवर्द गार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, शहन्शाहे अबरार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक बार ईद के रोज़ ईदगाह तशरीफ़ ले जाते हुए ख़्वातीन की त़रफ़ गुज़रे तो फ़रमाया : "ऐ औ़रतो ! **स-दक़ा** किया करो क्यूं कि मैं ने अक्सर तुम को **जहन्नमी** देखा है ।" ख़्वातीन ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस की वजह ? फ़रमाया : "इस के लिये तुम **ला'नत** बहुत करती हो और अपने शोहर की **ना शुक्री** करती हो । (صحیح البخاری، ج۱، ص۱۲۳، حدیث۳۰٤)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये

तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता होने की ब-र-कत से **अल्लाह** और उस के रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلَّم की मेहरबानी से बे वक़्अ़त पथ्थर भी **अनमोल हीरा** बन जाता, ख़ूब **जग-मगाता** और ऐसी शान से पैके अजल को **लब्बैक** कहता है कि देखने सुनने वाला उस पर रश्क करता और ऐसी ही मौत की आरज़ू करने लगता है। आप भी **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये। अपने शह्र में होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत और **राहे ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ में सफ़र करने वाले आ़शिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र कीजिये और शैख़े त़रीक़त **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के अ़त़ा कर्दा **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल कीजिये اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ दोनों जहां की ढेरों भलाइयां नसीब होंगी।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تعالیٰ علیٰ محمَّد

दुआ़ : या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ ! हमें अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की पैरवी में ख़ुशी व ग़म में अह़कामे शरीअ़त पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा। **या अल्लाह !** عَزَّوَجَلَّ हमें म-दनी इन्आ़मात का आ़मिल बना। **या अल्लाह !** عَزَّوَجَلَّ हमारी बे

ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा । **या अल्लाह !** عَزَّوَجَلَّ हमें दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में इस्तिक़ामत अ़ता फ़रमा । **या अल्लाह !** عَزَّوَجَلَّ हमें सच्चा आ़शिके़ रसूल बना । **या अल्लाह !** عَزَّوَجَلَّ उम्मते मह़बूब (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की बख़्शिश फ़रमा ।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

ग़ौर से पढ़ कर येह फ़ार्म पुर कर के तफ़्सील लिख दीजिये

जो इस्लामी भाई **फ़ैज़ाने सुन्नत** या **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के **कुतुब व रसाइल** सुन या पढ़ कर, बयान की **केसिट** सुन कर या हफ़्तावार, सूबाई व बैनल अक़्वामी **इज्तिमाआ़त** में शिर्कत या **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र या **दा'वते इस्लामी** के किसी भी म-दनी काम में शुमूलिय्यत की ब-र-कत से म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हुए, ज़िन्दगी में **म-दनी इन्क़िलाब** बरपा हुवा, नमाज़ी बन गए, दाढ़ी, इमामा वग़ैरा सज गया, आप को या किसी अ़ज़ीज़ को ह़ैरत अंगेज़ त़ौर पर **सिह़्ह़त** मिली, परेशानी दूर हुई, या मरते वक़्त **कलिमए त़य्यिबा** नसीब हुवा या अच्छी ह़ालत में **रूह़ क़ब्ज़** हुई, मर्हूम को अच्छी ह़ालत में **ख़्वाब** में देखा, **बिशारत** वग़ैरा हुई या **ता'वीज़ाते अ़त्तारिय्या** के ज़रीए आफ़ात व बलिय्यात से नजात मिली हो तो हाथों हाथ इस फ़ोर्म को पुर कर दीजिये और एक सफ़्हे पर वाक़िए की

तफ़्सील लिख कर इस पते पर भिजवा कर एह़सान फ़रमाइये "**म-दनी मर्कज़**" **फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर अह़मदआबाद, गुजरात (इन्डिया)**

नाम मअ़ वल्दिय्यत : .....

उ़म्र ..... किन से मुरीद या त़ालिब हैं .....

ख़त़ मिलने का पता .....

फ़ोन नम्बर (बमअ़ कोड) : .....

ई-मेइल एड्रेस .....

इन्क़िलाबी केसिट या रिसाले का नाम : .....

सुनने, पढ़ने या वाक़िआ़ रूनुमा होने की तारीख़ महीना/साल : ..... कितने दिन के म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र किया : ..... मौजूदा तन्ज़ीमी ज़िम्मादारी ..... **मुन्दरिजए** बाला ज़राएअ़ से जो ब-र-कतें ह़ासिल हुईं, फ़ुलां फ़ुलां बुराई छूटी वोह तफ़्सीलन और पहले के अ़मल की कैफ़िय्यत (अगर इ़ब्रत के लिये लिखना चाहें) म-सलन फ़ेशन परस्ती, डकैती वग़ैरा और **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ज़ाते मुबा-रका से ज़ाहिर होने वाली **ब-रकातो करामात** के "**ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़त**" मक़ाम व तारीख़ के साथ एक सफ़्हे पर **तफ़्सीलन तह़रीर फ़रमा दीजिये ।**

म-दनी मश्वरा

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ दौरे ह़ाज़िर की वोह यगानए रूज़गार हस्ती हैं कि जिन से श-रफ़े बैअ़त की ब-र-कत से लाखों मुसल्मान गुनाहों भरी ज़िन्दगी से ताइब हो कर **अल्लाहु रह़मान** عَزَّوَجَلَّ के अह़काम और उस के **प्यारे ह़बीबे लबीब** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नतों के मुत़ाबिक़ पुर सुकून ज़िन्दगी बसर कर रहे हैं। ख़ैर ख़्वाहिये मुस्लिम के मुक़द्दस जज़्बे के तह़्त हमारा **म-दनी मश्वरा** है कि अगर आप अभी तक किसी जामेए शराइत़ पीर साह़िब से बैअ़त नहीं हुए तो शैख़े त़रीक़त **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के फ़ुयूज़ो ब-रकात से **मुस्तफ़ीद** होने के लिये इन से **बैअ़त** हो जाइये। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ दुन्या व आख़िरत में काम्याबी व सुर्ख़-रूई नसीब होगी।

मुरीद बनने का त़रीक़ा

अगर आप मुरीद बनना चाहते हैं, तो अपना और जिन को **मुरीद या त़ालिब** बनवाना चाहते हैं उन का नाम नीचे तरतीब वार मअ़ वल्दिय्यत व उ़म्र लिख कर **"म-दनी मर्कज़" फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अह़मदआबाद,गुजरात (इन्डिया)** के पते पर रवाना फ़रमा दें, तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ उन्हें भी

सिल्सिलए **क़ादिरिय्या र-ज़विय्या अ़त्तारिय्या** में दाख़िल कर लिया जाएगा। (पता इंग्रेज़ी के केपिटल हुरूफ़ में लिखें)

E.mail : Attar@dawateislami.net

﴾1﴿ नाम व पता बॉल पेन से और बिल्कुल साफ़ लिखें, ग़ैर मश्हूर नाम या अल्फ़ाज़ पर लाज़िमन ए'राब लगाएं। अगर तमाम नामों के लिये एक ही पता काफ़ी हो तो दूसरा पता लिखने की ह़ाजत नहीं। ﴾2﴿ एड्रेस में मह़रम या सर परस्त का नाम ज़रूर लिखें ﴾3﴿ अलग अलग मक्तूबात मंगवाने के लिये जवाबी लिफ़ाफ़े साथ ज़रूर इरसाल फ़रमाएं।

नम्बर शुमार	नाम	मर्द / औ़रत	बिन / बिन्ते	बाप का नाम	उ़म्र	मुकम्मल एड्रेस

म-दनी मश्वरा : इस फ़ॉर्म को मह़फ़ूज़ कर लें और इस की मज़ीद कॉपियां करवा लें।

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया) ।

(تاریخ دمشق لابن عَساکِرج۱ ۵ص۱۳۸دارالفکربیروت)

किताब के ख़रीदार मु-तवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक-त-बतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये ।

बिन्ते अ़त्तार का जहेज़

बोल्टन मार्केट बाबुल मदीना (कराची) की
"मेमन मस्जिद" का अन्दरूनी मन्ज़र
वोह मक़ाम जहां मुफ़्तिये आ'ज़म पाकिस्तान वक़ारुद्दीन رحمۃ اللہ علیہ ने अपने "ख़लीफ़ा"
अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ का निकाह पढ़ाया ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके म-दनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आशिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **म-दनी इन्आमात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह की कोशिश के लिये **"म-दनी इन्आमात"** पर अमल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये **"म-दनी क़ाफ़िलों"** में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मक-त-बतुल मदीना की शाख़ें

मुम्बई : 19, 20, मुहम्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429
देहली : 421, मटिया महल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560
नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621
अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़लाहे दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385
हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786
हुब्ली : A.J. मुद्गोल कोम्प्लेक्स, A.J. मुद्गोल रोड, ओल्ड हुब्ली ब्रीज के पास, हुब्ली, कर्नाटक. फ़ोन : 08363244860